ओ३म्

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम्॥

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
प्रधान
श्री मनोहर लाल सरदाना

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी
संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार
सह संपादक
आचार्य ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17
Date of Dispatch 12&13 Every Month

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : सकारात्मक चिंतन	2
2.	ओउम् : मूल से जुड़ो...	3
3.	वेदों में सरस्वती...	4-5
4.	गायत्री की महिमा...	6
5.	स्वामी दयानन्द सरस्वती...	7
6.	धार्मिक, सामाजिक असमानता...	8-9
7.	प्रकृति से टकराव के कारण संकट	10
8.	महापुरुषों को नमन...	12-13
9.	क्या हनुमान आदि वानर...	14-15
10.	पुण्यतिथि : स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती...	21
11.	समाचार-सूचनाएं	22
12.	सुस्वास्थ्य : तुलसी ड्रिंक-इम्यूनिटी सिस्टम	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय
आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734
9899349304
captakg21@yahoo.co.in

Web : www.noidaaryasamaj.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।
सकारात्मक चिंतन

सुधी पाठको! वर्तमान में मानवता पर घोर संकट है, लगभग पूरा विश्व इस समय ठहरा हुआ है। ऐसी त्रासदी को दुनिया में अधिकांश लोगों ने पहली बार देखा है। त्रासदी के इस कठिन समय में मनुष्य जहां सम्पूर्ण मानवता और कठिन परीक्षा के दौर से गुजर रहा है वहीं पर इंसान की सहनशीलता की व्यक्तिगत परीक्षा भी हो रही है। बहुत सारे लोग हताशा एवं निराशा के गर्त में डूब रहे हैं। इस बीमारी के इलाज के दौरान भी कई लोग पहले ही हिम्मत हार जाते हैं। कुछ लोगों ने आत्महत्या भी करने का प्रयास किया है। इस महामारी का मुकाबला यों तो सम्पूर्ण विश्व मिल करके कर रहा है, किंतु घर में बैठा व्यक्ति कमजोर पड़ रहा है। कोई अपने व्यापार को लेकर चिंतित है, कोई अपने भविष्य को लेकर परेशान है, तो कोई घर में रह ही नहीं पा रहा है। इन सबके पीछे कारण है बचपन से लेकर विकसित हुए हमारे संस्कार एवं विचार। बाल्यकाल से एक बलिष्ठ हाथी को पतली से जंजीर से बांधा जाता है युवावस्था में बहुत बलवान होने पर भी वह हाथी जंजीर को इसलिए नहीं तोड़ पाता है, क्योंकि उसके मन में जंजीर के बहुत मजबूत होने के संस्कार पड़ चुके हैं। आज मनुष्य का जीवन तो खतरे में है किंतु उससे भी ज्यादा परीक्षा उसके धैर्य की है। आध्यात्मिक जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में सकारात्मक रहना है। आप कितने आध्यात्मिक अथवा धार्मिक हैं इस बात की परीक्षा ऐसी ही विषम परिस्थितियों में होती है। आप अपने आपको सकारात्मक रखना चाहते हैं तो मेरी इन बातों पर जरूर गौर करें-

1. ईश्वर पर पूर्ण विश्वास रखें तथा उसको हर समय अपने निकट महसूस करें। ईश्वर ही जन्म-जन्म का साथी है, इस सत्य को समझें।
2. प्रातः समय संध्या वंदन करें, गायत्री मंत्र का जाप करें, ओ३म् का उच्चारण करें यह सब आधा घंटा कम से कम अवश्य करें।
3. यज्ञ अवश्य करें-यदि आपको यज्ञ की प्रक्रिया नहीं आती तो कृपया कपूर तथा आग की समिधाये जलाकर गायत्री मंत्र से ग्यारह बार आहुति प्रदान करें- देसी घी तथा सामग्री से।
4. ध्यान अवश्य करें- साधारण योगासन एवं प्राणायाम नियमित रूप से करें।
5. टीवी पर समाचार दिन में दो बार ही देखें। मनोरंजन कार्यक्रम ज्यादा देखें।
6. घर पर कार्य करने की योजना बनाये, दिनचर्या नियमित रखें।
7. घर के लोगों के साथ समय ज्यादा बिताये और फोन पर बात कम करें।
8. घर के बड़ों के पास बैठकर उनके अनुभव सुनें।
9. क्रोध बिल्कुल न करें, परिस्थितियों से तालमेल बिठायें।
10. मुसीबत में फंसे लोगों की सहायता करें तथा जिन संस्थाओं से आप जुड़े हैं उनका हालचाल लेते रहें।

■ **आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार**

त्रासदी के इस कठिन समय में मनुष्य जहां सम्पूर्ण मानवता और कठिन परीक्षा के दौर से गुजर रहा है वहीं पर इंसान की सहनशीलता की व्यक्तिगत परीक्षा भी हो रही है। बहुत सारे लोग हताशा एवं निराशा के गर्त में डूब रहे हैं। इस बीमारी के इलाज के दौरान भी कई लोग पहले ही हिम्मत हार जाते हैं। कुछ लोगों ने आत्महत्या भी करने का प्रयास किया है। इस महामारी का मुकाबला यों तो सम्पूर्ण विश्व मिल करके कर रहा है, कितु घर में बैठा व्यक्ति कमजोर पड़ रहा है। कोई अपने व्यापार को लेकर चिंतित है, कोई अपने भविष्य को लेकर परेशान है, तो कोई घर में रह ही नहीं पा रहा है। इन सबके पीछे कारण है बचपन से लेकर विकसित हुए हमारे संस्कार एवं विचार। बाल्यकाल से एक बलिष्ठ हाथी को पतली से जंजीर से बांधा जाता है युवावस्था में बहुत बलवान होने पर भी वह हाथी जंजीर को इसलिए नहीं तोड़ पाता है, क्योंकि उसके मन में जंजीर के बहुत मजबूत होने के संस्कार पड़ चुके हैं। आज मनुष्य का जीवन तो खतरे में है कितु उससे भी ज्यादा परीक्षा उसके धैर्य की है। आध्यात्मिक जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में सकारात्मक रहना है। आप कितने आध्यात्मिक अथवा धार्मिक हैं इस बात की परीक्षा ऐसी ही विषम परिस्थितियों में होती है।

ओ३म् : मूल से जुड़ो...

■ गंगाशरण आर्य (साहित्य सुमन)

वेद में सिद्धांत है। वेद ईश्वर की थ्योरी है सृष्टि उसका प्रैक्टिकल है इसलिए थ्योरी गलत पढ़ाई जाएगी तो प्रैक्टिकल तो गलत होगा ही। कुरान की थ्योरी गलत है इसलिए प्रैक्टिकल देख लो, अत: मूल से जुड़ना चाहिए क्यों जुड़ना चाहिए? जब तक फल-मूल वृक्ष से जुड़ा रहता है तो परिपुष्ट रहता है, सड़ता नहीं है और जब मूल से हटा दिया जाए तो सड़ना शुरू हो जाता है।

विकार युक्त हो जाता है, कीड़े पड़ जाते हैं और उसे सुरक्षित रखने के लिए साधनों को जुटाना पड़ता है। वह सड़ा हुआ फल कभी भी आरोग्य प्रदान नहीं कर सकता। उसी प्रकार मनुष्य जब मूल परमपिता परमात्मा से दूर हो जाता है तो उसके जीवन में विकार उत्पन्न होकर दुर्व्यसन रूपी कीड़े उसके शरीर को अपना घर बना लेते हैं और उसका जीवन दुर्गंधयुक्त हो जाता है और जिस प्रकार सड़ा हुआ फल समाज को आरोग्य अर्थात स्वास्थ्य प्रदान नहीं कर सकता उसी प्रकार परमपिता परमात्मा से दूर होने के बाद दुर्व्यसन व पापाचार से युक्त व्यक्ति समाज को सही दिशा प्रदान न करके घोर पतनकारी पथ का अनुगामी बना देगा इसलिए मूल से जुड़ो क्योंकि मूल से जुड़ने पर ही व्यक्ति अपने लक्ष्य तक पहुंच सकता है। इसी प्रकार मूल चेतन परमपिता परमात्मा के विषय में ठीक-ठीक ज्ञान न होने के कारण उसके सही स्वरूप से अनभिज्ञ रहने के कारण व्यक्ति उसे एकदेशी मान लेता है जिससे समाज में आपराधिक प्रवृतियां बढ़ जाती है और व्यक्ति स्वच्छंद होकर अधर्मयुक्त कार्यों में लिप्त हो जाता है लेकिन यदि परमात्मा के सही स्वरूप का चिंतन हर मनुष्य कर ले कि ईश्वर सर्वव्यापक और न्यायकारी है तो मंदिर में स्थानबद्ध करके बिठाए गए भगवान को वहीं तक सीमित न समझकर कोई भी गलत कार्य करना तो दूर, करने का विचार भी उसके मन में नहीं आएगा क्योंकि हर पल, हर क्षण उसे इस बात का आभास रहेगा कि मैं ईश्वर के सीसीटीवी कैमरे की कड़ी निगरानी में हूं जो ईश्वर के सर्व्यापक होने से सब जगह लगा हुआ है और ये न तो कभी खराब होता है और न ही बंद होता है और न्यायकारी होने से ईश्वर की दंड व्यवस्था भी कड़ी है तो गलत काम के लिए हमारे जीवन में स्थान ही नहीं होगा। हमें मूल ईश्वर से क्यों जुड़ना चाहिए? आइए! एक उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं-

एक बार विद्यालय में एक अध्यापक विद्यार्थियों को गणित पढ़ा रहे थे पढ़ाते समय उन्होंने ब्लैक बोर्ड पर एक लिखा और बच्चों से पूछा कि कितनी संख्या लिखी है तो बच्चों ने जबाव दिया एक, मास्टर जी ने एक के आगे जीरो लगा दिया और फिर पूछा तो बच्चों ने कहा कि दस बन गया। इसी प्रकार फिर से मास्टर जी ने एक जीरो और लगाकर फिर पूछा कि कितनी संख्या हो गई तो बच्चों ने कहा कि सौ, अब एक जीरो और लगा दी तो संख्या बन गई हजार इसी प्रकार मास्टर जी जीरो लगाते गए और संख्या बढ़कर अरब, खरब आदि हो गई इतने में एक बच्चा कक्षा में से खड़ा हुआ उसने डस्टर उठाया और एक मिटा दिया अब क्या हुआ वो अरबों, खरबों का संख्या एक के मिटाते ही एक पल में जीरो हो गई। कहने का तात्पर्य है कि एक से जुड़े बिना संसार में हमारी कीमत भी जीरो है।

मूल से जुड़ने का अर्थ है ईश्वरीय सत्ता के प्रति अटूट विश्वास होना। हमारा ईश्वर के प्रति विश्वास किस प्रकार से अटूट होना चाहिए आईए! एक उदाहरण से समझने का प्रयास करें- एक बार एक हवाई जहाज में 10 सवारी बैठी हुई थी। उन 10 सवारियों में एक बच्ची 11 वर्ष की थी बाकी सभी 9 व्यक्ति बड़े-बड़े थे। हवाई जहाज ने जैसे ही उड़ान भरी तो करीब 10 मिनट के बाद मौसम खराब होने के कारण हवाई जहाज में तकनीकी खराबी आ गई और हवाई जहाज का संतुलन डगमगाने लगा, बिगड़ने लगा। हवाई जहाज मैं बैठी बच्ची ऐसी स्थिति में उछल-कूद मचाकर हर्ष और उल्लास में मग्न थी और बच्ची के अलावा सवार 9 व्यक्ति हाय मरे-हाय मरे, बचाओ हमें-बचाओ हमें, घबराने लगे, कुछ समय के बाद हवाई जहाज ठीक गति से चलने लगा।

तब उन व्यक्तियों ने उस 11 वर्ष की बच्ची से पूछा कि बेटी हवाई जहाज की ऐसी स्थिति में आपको जरा भी डर नहीं लगा तनिक भी घबराहट नहीं हुई तो उस बच्ची ने बड़ा सुन्दर जवाब दिया कि इस हवाई जहाज को चला रहे कैप्टन मेरे पिताजी है जो हवाई जहाज चलाने में बहुत ही एक्सपर्ट हैं तो मुझे किस बात का डर? कहने का तात्पर्य है कि जीवन रूपी हवाई जहाज को चलाने वाला वह सर्वव्यापक परमपिता परमात्मा है तो फिर जीवन रूपी हवाई जहाज में कैसी भी खराबी आ जाए तो हाय तोबा मचाने की जरूरत ही नहीं है। ○○

वेदों में सरस्वती

डॉ. विवेक आर्य

सरस्वती नदी की खोज एक ऐतिहासिक घटना है। प्राचीन संस्कृत वाङ्मय में सरस्वती का अनेकशः उल्लेख है। यह मात्र एक नदी नहीं है, अपितु हमारी संस्कृति का एक अमूल्य स्त्रोत है। सरस्वती हमारे इतिहास का स्त्रोत भी है। अधिकतर नगरों का विकास नदियों के किनारे हुआ। इस दृष्टि से सरस्वती के मूल मार्ग की खोज से आर्यावर्त्त के अज्ञात इतिहास पर भी प्रभूत प्रकाश डाला जा सकता है। जिन विनष्ट सभ्यताओं को वैदिक संस्कृति से भिन्न कहा जाता रहा है, वे भी वैदिक सभ्यता ही हैं, इस तथ्य को और अधिक दृढ़ता से प्रमाणित किया जा सकता है। सरस्वती शोध संस्थान के माध्यम से श्री दर्शनलाल जैन के परम पुरुषार्थ और वर्तमान सरकार द्वारा इस राष्ट्रीय महत्व के कार्य में रुचि लेने के कारण ऐसी संभावनाएं दिखाई देने लगी हैं कि सरस्वती के मार्ग को खोज लिया गया है। नासा द्वारा लिए गए चित्रों के माध्यम से भी इसकी पुष्टि होती है।

दो धाराएं : सरस्वती नदी के संबंध में दो प्रकार की विचारधाराएं हैं। एक तो वह विचारधारा है जो भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास की प्रत्येक गौरवशाली वस्तु को मिथक मानती है। उन्होंने अपनी इतिहास दृष्टि की कुछ सीमाएं निर्धारित की हुई हैं। वे उससे बाहर कुछ प्रमाणित होता हुआ नहीं देख सकते। वे सरस्वती नदी को भी मिथक मानते हैं। यमुनानगर के गांव में मिली जलधारा सरस्वती ही प्रमाणित हो जाए तो यह आवश्यक नहीं है कि वे अपनी भूल का सुधार कर लेंगे। इस विषय में कुछ वर्ष पहले हमारी प्रो. सूरजभान जी से दैनिक भास्कर के 'पाठकों के पत्र' कालम के माध्यम से बहस हुई थी। जब हमने वैदिक साहित्य के संदर्भों का उल्लेख किया तो वे वैश्विक समुदाय की मान्यताओं का आश्रय लेने लगे। यानि हमारे साहित्य में क्या है– इसका निर्णय करने के लिए हम दूसरे देशों के लोगों के मुंह की ओर देखेंगे! हमारे साहित्य में क्या है, यह हमें वे लोग बताएंगे जिनमें संस्कृत में पत्र लिखने की योग्यता भी नहीं थी। जो हमारे देश के इतिहास को हीन बताकर, वेदों को गड़रियों के गीत बताकर हमारी वेदों के प्रति श्रद्धा को समाप्त करना चाहते थे और हमें ईसाई मत की ओर आकर्षित करना चाहते थे, उनसे सत्य की आशा रखना केवल भोलापन ही है। सरस्वती, रामायण, महाभारत, आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य होना–ऐसे ही कुछ विषय हैं जिनको मिथक बताने के लिए वे पीढ़ियों से तुले हुए हैं। जिस प्रकार रामसेतु के पुरातात्विक साक्ष्य मिलने पर भी उनकी धारणा नहीं बदली, उसी प्रकार सरस्वती नदी मिल जाने पर भी वे सरस्वती को मिथक कहना छोड़ देंगे, इस बात की उनसे आशा नहीं की जा सकती।

सरस्वती के संबंध में दूसरी विचारधारा इस देश के गौरवमय अतीत में विश्वास रखने वालों की है। इस देश की संस्कृति कृषि प्रधान रही है। ऐसे में नदियों का संबंध जीवन में समृद्धि से रहना स्वाभाविक ही है। वैदिक ज्ञान के अभाव में जैसे अन्य जड़ वस्तुओं की पूजा होने लगी, वैसे ही नदियों की भी होने लगी होगी, इसमें भी कोई आश्चर्य

सरस्वती के संबंध में दूसरी विचारधारा इस देश के गौरवमय अतीत में विश्वास रखने वालों की है। इस देश की संस्कृति कृषि प्रधान रही है। ऐसे में नदियों का संबंध जीवन में समृद्धि से रहना स्वाभाविक ही है। वैदिक ज्ञान के अभाव में जैसे अन्य जड़ वस्तुओं की पूजा होने लगी, वैसे ही नदियों की भी होने लगी होगी, इसमें भी कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इस प्रकार सरस्वती आस्था और श्रद्धा का केन्द्र बन गई। लेकिन आस्था कोई अकादमिक प्रमाण नहीं है। लोगों की आस्थाएं भिन्न-भिन्न हो सकती हैं। जब हमारे प्राचीन साहित्य में सरस्वती नदी के प्रभूत उल्लेख हैं तो हमें आस्था की आड़ लेने की क्या आवश्यकता है। अब पुरातात्विक साक्ष्य मिलने के बाद तो इसकी प्रामाणिकता में संदेह का कोई स्थान ही नहीं है। जब दूसरी विचारधारा के लोग वेदों में सरस्वती नदी का वर्णन होने की बात करते हैं तो लगता है कि एक झूठ हजार बार बोलने के कारण सच हो गया है। जो षड्यंत्र वेद के पाश्चात्य भाष्यकारों ने रचा था, वह सफल हो गया है। ब्रिटिश शासन के दौरान और स्वतंत्रता के बाद के वर्षों में संस्कृत और वेद विद्या का इतना ह्रास हुआ है कि इस भ्रम के विरुद्ध उठने वाले स्वर भी बहुत कम हो गए हैं। वेदों में सरस्वती नदी को वे लोग ढूंढ रहे हैं जो वेद को अपौरुषेय मानते हैं।

की बात नहीं है। इस प्रकार सरस्वती आस्था और श्रद्धा का केन्द्र बन गई। लेकिन आस्था कोई अकादमिक प्रमाण नहीं है। लोगों की आस्थाएं भिन्न-भिन्न हो सकती हैं। जब हमारे प्राचीन साहित्य में सरस्वती नदी के प्रभूत उल्लेख हैं तो हमें आस्था की आड़ लेने की क्या आवश्यकता है। अब पुरातात्विक साक्ष्य मिलने के बाद तो इसकी प्रामाणिकता में संदेह का कोई स्थान ही नहीं है।

जब दूसरी विचारधारा के लोग वेदों में सरस्वती नदी का वर्णन होने की बात करते हैं तो लगता है कि एक झूठ हजार बार बोलने के कारण सच हो गया है। जो षड्यंत्र वेद के पाश्चात्य भाष्यकारों ने रचा था, वह सफल हो गया है। ब्रिटिश शासन के दौरान और स्वतंत्रता के बाद के वर्षों में संस्कृत और वेद विद्या का इतना ह्रास हुआ है कि इस भ्रम के विरुद्ध उठने वाले स्वर भी बहुत कम हो गए हैं। वेदों में सरस्वती नदी को वे लोग ढूंढ रहे हैं जो वेद को अपौरुषेय मानते हैं। अभी आरएसएस से जुड़े एक पूर्व सांसद का लेख आया। वे लिखते हैं कि ऋग्वेद के एक राजा सुदास का राज्य सरस्वती नदी के तट पर था। तो क्या वेदों की रचना राजा सुदास के बाद हुई है? वे एक मंत्र को गृत्समद् का रचा बताते हैं। तो क्या वेद मंत्रों की रचना ऋषियों ने की है? यह एक उदाहरण मात्र है। वेद के अनुयायी कहे जाने वाले लोग वेद के संबंध में कितने भ्रम में हैं, यह बात पीड़ादायक है।

वेद क्या है : वेद ईश्वरीय ज्ञान है। ईश्वर नित्य है। उसका ज्ञान भी नित्य है। उसके ज्ञान में कमी या बढ़ोतरी नहीं हो सकती। सृष्टि प्रवाह से अनादि है। हर सृष्टि के प्रारम्भ में ईश्वर मनुष्यों के कल्याण के लिए यह ज्ञान देता है। यह ईश्वर का सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है, मनुष्यों के लिए सम्पूर्ण है। वेद ऋषियों के हृदय में प्रकाशित होता है। ऋषि मंत्रों को बनाने वाले नहीं हैं, वे मंत्रों के द्रष्टा हैं। उन्होंने उनके अर्थ जाने हैं। वेद सार्वकालिक और सार्वभौमिक है। इसमें सांसारिक वस्तुओं पहाड़ों, नदियों, देशों, मनुष्यों का नाम नहीं हो सकता है। वेद सांसारिक इतिहास और भूगोल के पुस्तक नहीं हैं। इतिहास और भूगोल बदलते रहते हैं, वेद बदलते नहीं हैं। वेद में अनित्य इतिहास नहीं हो सकता है। भारतीय परम्परा में यह सर्वतंत्र सिद्धांत है। यदि वेद में सांसारिक वस्तुओं के या व्यक्तियों के नाम या इतिहास होंगे तो वेद शाश्वत नहीं हो सकता।

वेद में नाम : वेद में सरस्वती, गंगा, यमुना, कृष्ण आदि ऐतिहासिक शब्द आते हैं। पर ये ऐतिहासिक वस्तुओं या व्यक्तियों के नाम नहीं हैं। वेद में इनके अर्थ कुछ और हैं। इस बात को समझने के लिये तीन बातों का जान लेना आवश्यक है- 1. वेद शाश्वत हैं। ये वस्तु या व्यक्ति अनित्य हैं। 2. सांसारिक वस्तुओं के नाम वेद से लेकर रखे गए हैं, न कि इन नाम वाले व्यक्तियों या वस्तुओं के बाद वेदों की रचना हुई है। जैसे किसी पुस्तक में यदि इन पंक्तियों के लेखक का नाम आता है तो वह इस लेखक के बाद की पुस्तक होगी। इस विषय में मनु की साक्षी भी है।

सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक्।
वेद शब्देभ्यः एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे।।

3. वेद के शब्द यौगिक हैं, रूढ़ नहीं हैं। हम किसी वस्तु को नदी क्यों कहते हैं? क्योंकि हम ऐसी रचना को जिसमें प्रभूत जल बहता है, नदी कहते सुनते आए हैं। यह रूढ़ि है। वेद में ऐसा नहीं है। वेद के शब्दों के अर्थ उन शब्दों में निहित होते हैं। जैसे जो वस्तु नद-नाद करती है, वह नदी है। यह निर्वचन पद्धति है। ऋषि दयानन्द और अन्य सभी प्राचीन यास्क आदि ऋषि मुनि इसी पद्धति को स्वीकार करते हैं। इस बात को समझकर आइये हम प्रकरणवश वेद में सरस्वती नदी की बात पर विचार करते हैं- वेद में सरस्वती नाम है, अनेकशः है। मुख्य रूप से ऋग्वेद के सप्तम मंडल के 95-96 सूक्तों में सरस्वती का उल्लेख है। इनके अलावा भी वेद में अनेक मंत्र हैं जिनमें सरस्वती का उल्लेख है। लेकिन यह सरस्वती किसी देश में बहने वाली नदी नहीं है।

सरस्वती का अर्थ : वेद के अर्थ समझने के लिए हमारे पास प्राचीन ऋषियों के प्रमाण हैं। निघण्टु में वाणी के 57 नाम हैं, उनमें से एक सरस्वती भी है। अर्थात् सरस्वती का अर्थ वेदवाणी है। ब्राह्मण ग्रंथ वेद व्याख्या के प्राचीनतम ग्रंथ है। वहां सरस्वती के अनेक अर्थ बताए गए हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं- 1. वाक् सरस्वती।। वाणी सरस्वती है। (शतपथ 7/5/1/31) 2. वाग् वै सरस्वती पावीरवी। (7/3/39) पावीरवी वाग् सरस्वती है। 3. जिह्वा सरस्वती। (शतपथ 12/9/1/14) जिह्वा को सरस्वती कहते हैं। 4. सरस्वती हि गौः। वृषा पूषा। (2/5/1/11) गौ सरस्वती है अर्थात् वाणी, रश्मि, पृथिवी, इंद्रियादि। अमावस्या सरस्वती है। स्त्री, आदित्य आदि का नाम सरस्वती है। 5. अथ यत् अक्ष्योः कृष्णं तत् सारस्वतम्। आंखों का काला अंश सरस्वती का रूप है। 6. अथ यत् स्फूर्जयन् वाचमिव वदन् दहति। ऐतरेय 3/4, अग्नि जब जलता हुआ आवाज करता है, वह अग्नि का सारस्वत रूप है। 7. सरस्वती पुष्टिः, पुष्टिपत्नी। सरस्वती पुष्टि है और पुष्टि को बढ़ाने वाली है। 8. एषां वै अपां पृष्ठं यत् सरस्वती। (तै. 1/7/5/5) जल का पृष्ठ सरस्वती है। OO

गायत्री की महिमा

प्रियांशु सेठ

वेदों, उपनिषदों, पुराणों, स्मृतियों आदि सभी शास्त्रों में गायत्री मंत्र के जप का आदेश दिया है। यहां गायत्री जप के संबंध में 'देवी भागवत' के ये श्लोक देखिये-

गायत्र्युपासना नित्या सर्ववेदैः समीरिता।
यया विना त्वधः पातो ब्राह्मणस्यास्ति सर्वथा।।
तावता कृतकृत्यत्वं नान्यापेक्षा द्विजस्य हि।
गायत्रीमात्रनिष्णातो द्विजो मोक्षमवाप्नुयात्।।

गायत्री ही की उपासना सनातन है। सब वेदों में इसी की उपासना और शिक्षा दी गई है, जिसके बिना ब्राह्मण का सर्वथा अध:-पतन हो जाता है। द्विजमात्र कि लिए इतने से ही कृतकृत्यता है। अन्य किसी उपासना और शिक्षा की आवश्यकता नहीं। गायत्रीमात्र में निष्णात द्विज मोक्ष को प्राप्त होता है।

गायत्री-मंत्र को जो गुरु-मंत्र कहा गया है, तो इसमें विशेष तथ्य है। चारों वेदों में इसका वर्णन है। ऋग्वेद में 6/62/10 का मंत्र गायत्री मंत्र ही है। सामवेद के 13/3/3 उत्तरार्चिक में और यजुर्वेद में दो-तीन स्थानों में गुरुमंत्र का आदेश है। 3/35, 30/2 और 36/3 पर अथर्ववेद में तो यह सारा रहस्य ही खोल दिया है कि यह वेद-माता, गायत्री-माता, द्विजों को पवित्र करनेवाली, आयु, स्वास्थ्य, संतान, पशु, धन, ऐश्वर्य, ब्रह्मवर्चस् देनेवाली और ईश्वर दर्शन करानेवाली है। छान्दोग्योपनिषद् ने भी इसकी महिमा का गायन किया है।

बादरायण के ब्रह्मसूत्र 1/1/25 पर शारीरिक भाष्य में श्री शंकराचार्य जी ने लिखा है, 'गायत्री-मंत्र के जप से ब्रह्म की प्राप्ति होती है।' भगवान् मनु ने यह आदेश दिया है-'तीन वर्ष तक साधनों के साथ गायत्री का जप करते रहने से जप-कर्त्ता को परब्रह्म की प्राप्ति होती है।'

योऽधीतेऽहन्यहन्येतांस्त्रीणि वर्षाण्यतन्द्रितः।
स ब्रह्म परमभ्येति वायुभूतः खमूर्तिमान्।। -मनु. 2/82

इसी प्रकार महाभारत के भीष्मपर्व 4/38 में और मनुस्मृति के दूसरे अध्याय के अन्य श्लोकों में भी गायत्री-मंत्र की महानता प्रकट की गई है। महर्षि व्यास का कथन है, 'पुष्पों का सार मधु है, दूध का सार घृत है और चारों वेदों का सार गायत्री है। गंगा शरीर के मल धो डालती है और गायत्री-गंगा आत्मा को पवित्र कर देती है।' अत्रि ऋषि का यह कथन बड़ा मार्मिक है- 'गायत्री आत्मा का परम शोधन करने वाली है।'

महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने 'सत्यार्थप्रकाश' के तृतीय समुल्लास में मनु भगवान् का एक श्लोक देकर यह आदेश किया है- 'जंगल में अर्थात् एकांत देश में जा, सावधान होकर जल के समीप स्थित होके नित्य-कर्म को करता हुआ सावित्री अर्थात् गायत्री मंत्र का उच्चारण, अर्थ-ज्ञान और उसके अनुसार अपने चाल-चलन को करे, परंतु यह जप मन से करना उत्तम है।'

चरक ऋषि ने 'चरक-संहिता' में यह कहा है कि 'जो ब्रह्मचर्य-सहित गायत्री की उपासना करता है और आंवले के ताजा (वृक्ष से अभी-अभी तोड़े हुए) फलों के रस का सेवन करता है, वह दीर्घ-जीवी होता है।'

य एतां वेद गायत्रीं पुण्यां सर्वगुणान्विताम्।
तत्वेन भरतश्रेष्ठ स लोके न प्रणश्यति।।

-महाभारत, भीष्मपर्व अ. 4 श्लोक 16

पं. रामनारायणदत्त शास्त्री पांडेय 'राम' कृत अनुवाद-भरतश्रेष्ठ! जो लोक में स्थित इस सर्वगुणसम्पन्न पुण्यमयी गायत्री को यथार्थ रूप से जानता है वह कभी नष्ट नहीं होता है।

चतुर्णामपि वर्णानामाश्रमस्य विशेषतः।
करोति सततं शान्तिं सावित्रीमुत्तमां पठन्।।

-महाभारत, अनुशासनपर्व, अ. 150 श्लोक 70, जो उत्तम गायत्री मंत्र का जप करता है, वह पुरुष चारों वर्णों और विशेषत: चारों आश्रमों में सदा शांति स्थापन करता है।

या वै सा गायत्रीयं वाव सा येयं पृथिव्यस्यां हीदं सर्व भूतं प्रतिष्ठितमेतामेव नातिशीयते। -छान्दोग्योपनिषद् 3/12/2

निश्चय से जो पृथिवी है, निश्चय यह वह गायत्री है। जो यह इस पुरुष में शरीर है। इसी में ये प्राण प्रतिष्ठित है। इसी शरीर को ये प्राण नहीं लांघते। 'गायत्री-मंजरी' में तो गायत्री ही को सब-कुछ वर्णन कर दिया गया है और लिखा है-

भूलोकस्यास्य गायत्री कामधेनुर्मता बुधैः।
लोक आश्रयणेनामुं सर्वमेवाधिगच्छति।।

विद्वानों ने गायत्री को भूलोक की कामधेनु माना है, संसार इसका आश्रय लेकर सब-कुछ प्राप्त कर लेता है। स्मृतियों में गायत्री का वर्णन कुछ इस प्रकार से है-

ब्रह्मचारी निराहारः सर्वभूतहिते रतः।
गायत्र्या लक्षजाप्येन सर्वपापैः प्रमुच्यते।।

-संवर्तस्मृति:, श्लोक 219

जो ब्रह्मचारी निराहार सब प्राणियों के कल्याण के

लिए गायत्री को एक लाख जपता है वह सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है।

गायत्रीं यस्तु विप्रो वै जपेत नियतः सदा।
स याति परमं स्थानं वायुभूतः खमूर्तिमान्।।

–संवर्तस्मृतिः, श्लोक 222

जो ब्राह्मण जितेन्द्रिय होकर सर्वदा गायत्री का जप करता है वह वायु और आकाशरूप हो परमस्थान (मोक्ष) को प्राप्त करता है।

सहस्त्रपरमां देवीं शतमध्यां दशावराम्।
गायत्रीं यो जपेद्विप्रो न स पापेन लिप्यते।।

–अत्रिस्मृतिः, अ. 2, श्लोक 9

जो ब्राह्मण गायत्री को 1110 बार जपता है वह पापों से लिप्त नहीं होता।

सर्वेषां जप्यसूक्तानामुचां च यजुषां तथा।
साम्नां वैकाक्षरादीनां गायत्रीं परमो जपः।।

–बृहत्पराशरस्मृतिः, अध्याय 3, श्लोक 4

जप करने योग्य सब सूक्तों में वैसा ही ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद के और एक अक्षर आदि के मध्य में गायत्री जप श्रेष्ठ है।

एकाक्षरेअपि विप्रस्य गायत्र्या अपि पार्वति।

–गायत्रीतंत्रम् (तृतीय पटलः)

गायत्री के एक अक्षर को जानने वाले ब्राह्मण को नमस्कार है।

गायत्रीरहितो विप्रः स एव पूर्वकुक्कुरः।।

–गायत्रीतंत्रम् (तृतीय पटलः)

गायत्रीमंत्र से रहित ब्राह्मण प्रत्येक जन्म में कुक्कुर होकर हड्डी खाता है। पुराणों ने भी गायत्री की महिमा का गुणगान गाया है–

तावताकृतकृत्यत्वं नान्यापेक्षा द्विजस्य हि।
गायत्रीमात्रनिष्णातो द्विजो मोक्षमवाप्नुयात्।।

–श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे, द्वादशस्कंधे, अध्याय 8

केवल गायत्रीमंत्र को जानने में दक्ष द्विज मोक्ष को प्राप्त होता है। इसके जप करने से ही सब कर्त्तव्य पूर्ण हो जाते हैं। द्विज को दूसरे कर्मों की अपेक्षा नहीं है।

एकाक्षरं परं ब्रह्म प्राणायामः परन्तपः।
सावित्र्यास्तु परन्नास्ति मौनात् सत्यं विशिष्यते।।

–अग्निपुराणे, 215 अध्याय, श्लो. 5

एकाक्षर (ओ३म्) पर ब्रह्म है। प्राणायाम परम तप है। सावित्री (गायत्री) से उत्तम दूसरा मंत्र नहीं है, मौन से सत्यवाणी श्रेष्ठ है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के नारी जाति पर किये उपकार

1. नारी को पढ़ने का अधिकार वेद में निहित है को उजागर किया।
2. सती प्रथा का विरोध कर बन्द करवाया।
3. बाल विवाह बन्द करवाया।
4. छोटी उम्र में किये विवाह और गौना नहीं हुआ और पति की मृत्यु हो गई तो वो वधु जीवन पर्यन्त विधवा रहती थी, उसका पुनः विधवा विवाह वेद सम्मत बता कर विधवा विवाह करवाने का दायित्व आर्यसमाज को दिया।
5. वेद को मनुष्य के लिए संविधान बता कर उस अनुसार राजव्यवस्था चलाने के लिए जोर दिया।
6. गुण कर्म अनुसार कार्य सौंपने का विधान बताया जो आज राजकार्य में लागू है।
7. छुआछूत मिटाने का आंदोलन चला कर जागृति फैलाई।

इस हेतु आर्यसमाज की स्थापना कर उन सभी को आर्य यानी श्रेष्ठ बनाने की जिम्मेवारी सौंपी की चाहे चारों वर्ण अपने कार्यों के अनुसार जिस किसी भी छेत्र में दक्ष हो परन्तु संस्कारित नहीं हो, उनको उनकी योग्यता के अलावा राज धर्म राष्ट्र धर्म बताकर उनमें आर्यत्व के गुण होना आवश्यक समझ कर इस संस्था की आवश्यकता समझ इसकी स्थापना की।

मनुष्य की परिभाषा क्या है वो परिभाषा किस ग्रन्थ में लिखी है? उसका ज्ञान कराने यह संस्था गठित की लेकिन लोग पढ़ाई में ही योग्यता हासिल कर उसी को सर्वोपरि मानकर अकड़ना शुरू कर दिया।

यही से मनुष्यों के गुणों का पतन शुरू हो गया। अब ये कहां कब तक जाएगा ये मनुष्य ही जाने?

■■

धार्मिक, सामाजिक असमानता और वैदिक धर्म

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

मनुष्य के जन्म का प्रयोजन क्या है? इसका उत्तर ढूंढने पर हमें वेदों व वैदिक साहित्य जिसमें उपनिषद्, दर्शन ब्राह्मण ग्रन्थ, मनुस्मृति, रामायण व महाभारत आदि भी सम्मलित हैं, तर्कसंगत व सन्तोषजनक उत्तर मिलता है। वेद बताते हैं कि हमारा आत्मा अनादि, अनुत्पन्न, अनन्त, अविनाशी, चेतन, एकदेशी, कर्मों का कर्ता, भोक्ता, ज्ञान व कर्म इसका स्वभाव है, राग, द्वेष, मोह, इच्छा, काम, क्रोध, अग्नि से यह जलता नहीं, वायु इसे सुखा नहीं सकती, जल इसे गीला नहीं कर सकता, शस्त्र इसे काट नहीं सकते आदि नाना प्रकार के गुण इससे जुड़े हैं या यह सब गुण इसमें हैं। स्वाभाविक है कि जब आत्मा अनादि, अजन्मा व अविनाशी है तो इसका अस्तित्व सदा बना रहता है। इसे अपने अस्तित्व को सार्थक करने के लिए मनुष्य का जन्म चाहिये।

यह स्वयं तो जन्म ले नहीं सकता क्योंकि जन्म लेने में जो कुछ करना होता है वह यह न जानता है और न कर सकता है। फिर प्रश्न होता है कि मनुष्य जन्म कैसे प्राप्त हो, तो आवश्यकता है कि हमसे बड़ी एक सत्ता होनी चाहिये जो अस्तित्व, ज्ञान, शक्ति व सामर्थ्य आदि में हमसे बहुत बड़ी ही न हो अपितु चेतनस्वरूप, आनन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी आदि गुणों से युक्त भी हो। हम अपने विशाल ब्रह्माण्ड को देखते हैं तथा इस सृष्टि में प्राणी जगत का देखते हैं तो यह ज्ञात होता है कि उस सत्ता अस्तित्व अवश्यमेव है। जिसको ईश्वरी सत्ता की अनुभूति न हो, उसे स्वाध्याय, विचार, चिन्तन, ध्यान, विद्वानों व योगियों की संगति कर खोज करनी चाहिये। उसी सत्ता ने इस संसार का निर्माण किया है, उसी ने सभी प्राणियों को उत्पन्न किया है और वही संसार का पालन कर रही है अर्थात् चला रही हैं। अत: हमें अर्थात् हमारी आत्मा को जन्म देने का कार्य उस ईश्वर या परमात्मा द्वारा सम्पादित किया जाता है। इसने इस संसार की रचना की और उसके बाद मनुष्यों को उत्पन्न किया। उन्हें भाषा एवं वेदों का ज्ञान दिया। यह ज्ञान समता मूलक है। इसके जानने वालों ने महाभारत काल के बाद इसका दुरुपयोग कर अपना स्वार्थ सिद्ध किया जिस कारण मनुष्यों के अनेक वर्ग व जातियां बन गई और इस वर्ग के लोगों ने वेद व शास्त्रों के नाम, पर उन पर नानाविध अत्याचार किये। आइये, देखते हैं कि क्या वेदों में मनुष्यों में असमानता की शिक्षा है या समानता व बराबरी की।

वेदों व वेद मूलक मनुस्मृति आदि शास्त्रों की शिक्षा है कि जन्म से सब शूद्र, अज्ञानी, गुणहीन होते हैं और ज्ञान के संस्कारों से वह द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य बनते हैं। इसका अर्थ है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य आदि के घरों में भी जो संतानें जन्म लेती हैं वह संस्कार-शिक्षा-विद्याविहीन होने के कारण जन्म से शूद्र होती हैं। वर्णसूचक इन शब्दों के अर्थों पर विचार कर लेना भी उचित होगा। ब्राहमण बड़े व वेद-शास्त्र आदि के ज्ञानी लोगों को कहते हैं। ज्ञान के साथ-साथ उसके अनुरूप आचरण भी आवश्यक है। आचारहीन

वेद बताते हैं कि हमारा आत्मा अनादि, अनुत्पन्न, अनन्त, अविनाशी, चेतन, एकदेशी, कर्मों का कर्ता, भोक्ता, ज्ञान व कर्म इसका स्वभाव है, राग, द्वेष, मोह, इच्छा, काम, क्रोध, अग्नि से यह जलता नहीं, वायु इसे सुखा नहीं सकती, जल इसे गीला नहीं कर सकता, शस्त्र इसे काट नहीं सकते आदि नाना प्रकार के गुण इससे जुड़े हैं या यह सब गुण इसमें हैं। स्वाभाविक है कि जब आत्मा अनादि, अजन्मा व अविनाशी है तो इसका अस्तित्व सदा बना रहता है। इसे अपने अस्तित्व को सार्थक करने के लिए मनुष्य का जन्म चाहिये। यह स्वयं तो जन्म ले नहीं सकता क्योंकि जन्म लेने में जो कुछ करना होता है वह यह न जानता है और न कर सकता है। फिर प्रश्न होता है कि मनुष्य जन्म कैसे प्राप्त हो, तो आवश्यकता है कि हमसे बड़ी एक सत्ता होनी चाहिये जो अस्तित्व, ज्ञान, शक्ति व सामर्थ्य आदि में हमसे बहुत बड़ी ही न हो अपितु चेतनस्वरूप, आनन्द-स्वरूप, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी आदि गुणों से युक्त भी हो। हम अपने विशाल ब्रह्माण्ड को देखते हैं तथा इस सृष्टि में प्राणी जगत का देखते हैं तो यह ज्ञात होता है कि उस सत्ता अस्तित्व अवश्यमेव है। जिसको ईश्वरी सत्ता की अनुभूति न हो, उसे स्वाध्याय, विचार, चिन्तन, ध्यान, विद्वानों व योगियों की संगति कर खोज करनी चाहिये।

को वेद भी पवित्र नहीं कर सकता, यह वेद वचन है। मनुस्मृति का एक प्रसिद्ध बचन है कि जो द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य वेद विधि से ईश्वरोपासना सहित पंच महायज्ञों को नित्यप्रति नहीं करता है वह शूद्र हो जाता है और उसके इन वर्ण व वर्गों के सभी अधिकार छीन कर उसे शूद्र-सेवा करने वाले कुल समुदाय में सम्मिलित कर लेना चाहिये।

मनुस्मृति में ऐसे भी वचन हैं जिसमें कहा गया है कि वेदाध्ययन व श्रेष्ठ कर्मों को करने से शूद्र द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य हो जाता है। यह उचित व स्वाभाविक है। शूद्र शब्द प्राचीन वैदिक साहित्य में उन लोगों के लिए प्रयोग में लाया गया जो ज्ञान की दृष्टि से शून्य थे या इतने अल्पशिक्षित कि वह बुद्धि व ज्ञान से करने वाले कार्यों को भली प्रकार से नहीं कर सकते थे। उनसे सेवा के कार्य लिए जाते थे।

शिक्षा एवं वेदों के पढ़ने का अधिकार प्रत्येक मनुष्य को था वह चाहे किसी भी कुल में जन्मा हो या उसकी पृष्ठि भूमि कुछ भी क्यों न हो। इसमें वेद के मंत्र का ही प्रमाण है जिसे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने पुरुषार्थ व विद्याबल से यजुर्वेद से ढूंढ निकाला जो सभी स्त्रियों, शूद्रों व अंत्यजों आदि को वेदाध्ययन का अधिकार प्रदान करता है। यह मंत्र है, 'यथेमां वाचं कल्याणमा-वदानि जनेभ्यः। ब्रह्म्राजन्याभ्याम् शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं में कामः समृध्यामुप मादो नमतु। (यजु. 26/2)।' इस मंत्र में संसार को बनाने वाले ईश्वर ने सभी मनुष्यों को शिक्षा देते हुए कहा है कि उसने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, भृत्य, स्त्रियादि और अतिशूद्रादि के लिए भी वेदों का प्रकाश किया है। वह इसी मंत्र में आगे कहते हैं सब मनुष्य वेदों को पढ़-पढ़ा और सुन-सुनाकर विज्ञान को बढ़ायें। वह अच्छी बातों का ग्रहण करें तथा बुरों बातों को त्याग देवे जिससे कि वह दुःखों से छूटकर आनंद को प्राप्त हों।

शूद्र के अभिप्राय को जान लेने के बाद ब्राह्मण आदि वर्णों के अभिप्राय को जानना भी आवश्यक है क्योंकि इन वर्णों के लिए प्रयुक्त शब्दों को लेकर समाज में बड़ी भारी भ्रांति है। ब्राह्मण बड़े या ज्ञानी को कहते हैं जो वेदों का ज्ञानी, वेदानुसार जीवन व्यतीत करने वाला, दूसरों को अध्ययन-अध्यापन द्वारा सत्य-शिक्षा देने वाला अर्थात् एक आदर्श अध्यापक, यज्ञ करने व कराने वाला, दान लेने व देने वाला व्यक्ति होता था। क्षत्रिय भी वैदिक काल में कोई जाति नहीं थी। यह उन लोगों के लिए अभिप्रेत थी जो शारीरिक बल व वीरता के कार्य करते थे। सेना में वीरता के कार्य करने वाले सभी लोग क्षत्रिय कहलाते थे चाहें उनके माता-पिता किसी भी वर्ण के क्यों न हो। क्षत्रिय का मुख्य कार्य एवं दायित्व समाज के सभी लोगों की अन्याय वा उत्पीड़न से रक्षा करना होता था और वह ऐसा करते भी थे। जो नहीं करता था उसका वर्ण उसके गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार निर्धारित किया जाता था और उससे वही कार्य लिया जाता था।

इसी प्रकार वैश्य वर्ण का कार्य भी कृषि, गो-पशुपालन व व्यापार आदि मुख्य रूप से करना होता था। न्यून, निर्धारित व उचित सूद लेकर दूसरे जरूरतमंदों को धन भी देना उसके कार्यों में सम्मिलित था। वह एक प्रकार से इन कार्यों का ज्ञानी, अनुभवी व स्वभाव से इनमें रुचि रखने वाला होता था। इस प्रकार से वैदिक वर्ण व्यवस्था गुण, कर्मों व स्वभाव पर आधारित थी, जन्म व कुल पर आधारित नहीं थी। यह तो मध्यकाल में हमारे पंडित वर्ग ने अपने अज्ञान, अविद्या के कारण स्थापित की है जिसमें उनके स्वार्थ भी रहे हैं। इससे समाज, देश, धर्म व संस्कृति को भारी हानि हुई है। मध्यकाल में पूर्व कालीन गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वैदिक वर्ण व्यवस्था को त्याग कर जन्म पर आधारित जो जाति व्यवस्था प्रचलित हुई उसमें जन्म व जाति के आधार भेदभाव किया जाने लगा। ➲➲

प्रेरक वचन

- ऋषि दयानन्द ने बुद्धिवाद का प्रचार किया तथा सत्यता को ही अपने जीवन का उद्देश्य बनाया और यही बड़ा अंतर है जिससे ऋषि अन्य मत-पन्थों के संस्थापकों से विशिष्ट स्थान रखते हैं।
- न हम अंधविश्वासों को मानते हैं, न ही मिथ्या चमत्कारों को मानते हैं।
- स्वामी दयानन्द ने जिस धर्म का प्रचार किया, वह विज्ञान से परिपूर्ण है।
- हमने वैदिक धर्म का उदारता से प्रयोग किया है और इसके प्रकाशयुक्त पृष्ठ दूसरों के लिए खोल दिये हैं। हमने ऐसे नियम बना दिये हैं जिनसे सब जन वेदों को समान रूप से पढ़ सकते हैं।

प्रकृति से टकराव के कारण संकट

आचार्य ओमकार शास्त्री
उपाचार्य, आर्ष गुरुकुल, नोएडा

आज वर्तमान समय में समस्त विश्व में अशांति और महामारी की स्थिति बनी हुई है। इसके लिए भी हम स्वयं जिम्मेदार हैं। आज मनुष्य विज्ञान को सब कुछ मान बैठा है। वह परमात्मा को भूल गया है। जबकि ये सभी जानते हैं कि ये समस्त संसार परमात्मा ने बनाया है और जगत की आवश्यकतानुसार सुख-सुविधाएं प्रदान की हैं। संसार को संचालित करने के लिए मनुष्य को वेद रूपी ज्ञान भी प्रदान किया। वेदों में मनुष्य किस प्रकार जीवन जीना है, किस प्रकार व्यवहार करना है सब कुछ विस्तार से बतलाया हुआ है।

लेकिन आज के वैज्ञानिक युग में विज्ञान ने वेदों के मार्ग को नहीं अपनाया इसलिए ऐसी भयंकर बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है। वेदों में तो शुद्ध शाकाहारी भोजन को आहार बताया गया है, किसी जीव को खाना नहीं, लेकिन वर्तमान युग मांसाहारी आ गया है। हम ऐसे जीवों को खा जाते हैं जिनसे भयंकर बीमारियां जैसे कोरोना का सामना करना पड़ रहा है और समस्त विश्व पतन की ओर जा रहा है। सम्पूर्ण विश्व में अशांति फैल रही है। लोग मौत के शिकार हो रहे हैं। आहार के समय में बोले जाने वाला वेद मंत्र कहता है कि-

ओं अन्नपतेऽन्नस्य नो देहि अनमीवस्य शुष्मिणा। प्र प्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

यजु.11/83

अर्थात्-हे अन्न के स्वामिन् प्रभो! हमें अन्न प्रदान करो जो रोगरहित और पुष्टिकारक हो। सभी का कल्याण हो और मनुष्यों व पशुओं में तेज धारण करो। इस प्रकार की धारणा वेदवाणी द्वारा मनुष्य के लिए प्रदान की गई। लेकिन वह तो जीवों को खाने में लग गया जो कि खाने योग्य नहीं है। यदि ऐसा किया है तो इसका परिणाम तो भोगना ही पड़ेगा। इसलिए आज संसार अशांति से ग्रस्त और भयंकर बीमारी का शिकार हो रहा है।

वेदों में तो अकेले भोजन ग्रहण करने वाले को भी पापी कहा है, अभक्ष्य पदार्थों को खाने वाले को तो सुख और शांति प्राप्त हो ही नहीं सकती। हमारे ऋषियों ने तो मनुष्य के कल्याण के लिए उपदेश दिये- सत्यं वद, धर्म चर, यज्ञं कुरु आदि जिससे कि मनुष्य समाज और समृद्ध राष्ट्र का निर्माण होता है। आज हम फिर से संकल्प करें और यज्ञ एवं वेद के मार्ग को अपनायें।

आधुनिक जीवन शैली है प्रकृति से टकराव का कारण : अतीत में हमारे ऋषि-मुनियों ने अपने प्राकृतिक वातावरण में सौहार्द का जीवन जिया था। इस तरह, जब मनुष्य अस्तित्व में आया, तब एक अज्ञात और अलिखित पारिस्थितिकी संतुलन मौजूद था और हजारों वर्षों से मानव आबादी और मानव गतिविधियां प्राकृतिक क्षमताओं के अनुपात में बढ़ती रहीं। प्रकृति ने ही मनुष्य जाति को बसेरा और आजीविका मुहैया कराया।

पिछले 200 से भी अधिक वर्षों से दुनिया अप्रत्याशित रूप से बदलनी शुरू हो गई जिसकी वजह मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधनों, कोयले, तेल और प्राकृतिक गैस की खोज थी। इन सबने मानव जाति को सस्ती और सुविधाजनक ऊर्जा मुहैया कराया है जिसका इस्तेमाल हम अपने घरों को गर्म एवं ठंडा रखने और अपनी कारों, उपकरणों तथा उद्योगों को चलाने में करते हैं। शुरुआती चरणों में किसी ने भी नहीं सोचा था कि हमारी जीवन शैली में विकास और सुविधाओं के ये रूप पृथ्वी पर हमारे अस्तित्व को दांव पर लगा देंगे।

आज हम लोग अपने व्यावहारिक अनुभव से जानते हैं कि दुनिया का कोई भी शहर जीवाश्म ईंधनों के कुप्रभाव से निरापद नहीं है। हम यह भी जानते हैं कि वे पर्यावरण में किस तरह बड़े पैमाने पर ग्रीनहाउस गैसों का योगदान करती हैं। कई विज्ञानियों का मानना है कि ग्लोबल वार्मिंग, तेजी से जलवायु परिवर्तन और मौसम के प्रतिमानों में गड़बड़ी की वजह ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन ही है।

भौतिक कल्याण और आर्थिक विकास के नाम पर पृथ्वी के वातावरण में बड़े पैमाने पर हाइड्रोकार्बन गैसों के उत्सर्जन ने अपनी कीमत वसूली है और इसके खतरनाक नतीजों ने समूचे ग्रह को अपने लपेटे में ले लिया है। इसके बावजूद नीति-निर्माता, सरकारी नेता और सभी तरह के विशेषज्ञ इस समस्या के समाधान पर लड़ रहे हैं। इस समस्या में परमाणु ऊर्जा को भी जोड़ दीजिए जो द्वितीय विश्व युध्द के बाद आई। हालांकि पहले यह माना गया था कि यह प्रदूषण रहित, थोड़ी महंगी और समस्या का दीर्घकालिक समाधान है। दुनिया भर में बार-बार आने वाली प्राकृतिक आपदाएं बार-बार उन खतरों को रेखांकित किया है। ❍❍

अहिंसा परमो धर्मः

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

विश्वस्याखिलस्य यावन्तो धर्मग्रंथाः ख्याताः तेषु जीवहिंसा सर्वथा निषिद्धा एव। भारतीयशास्त्रेषु न केवलं जीवस्य शारीरिहिंसा एव वर्जिता, अपि तु मानसिकी वाचिकी हिंसा अपि निषिद्धा विद्यते। योगदर्शने योगसाधनासोपानेषु अहिंसापालनमपि एकतमं सोपानमस्ति। बौद्धदर्शने जैनदर्शने च अहिंसा सर्वस्वरूपेण तिष्ठति। सनातनधर्मेपि जीवहिंसा निषिद्धा एव।

न केवलं प्राणिनां शारीरिको हिंसा एव हिंसा, अति तु वचसा कुटुभाषणेन मिथ्यालापेन वा तेषां मनः संतापनमपि हिंसा, अति तु वचसा कटुभाषणेन मिथ्यालापेन वा तेषां मनः संतापनमपि हिंसा एव। एवमेव मनसा परापकारचिन्तनमपि हिंसा। आसां हिंसानां सर्वथा परित्यागः एवाहिंसा नाम परमो धर्मः। अतः जनैः मनसा वचसा कर्मणा च परेषां प्रतिकूलानि कार्याणि कदापि न कार्याणि। उक्तञ्च-

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

अहिंसाया विद्यते काप्यनुपमा विलक्षणा शक्तिः। सार्वभौमरूपेण आचरणात् पालनात् वा अहिंसामहाव्रतं साधकेषु विशिष्टविभूतीः शक्तिः च समुद्भावयति, येन ते लोकजयिनः भवन्ति। अहिंसायम् अमोघशस्त्रं गृहीत्वा आधुनिके युगे महात्मागान्धिमहोदयाः अत्याधुनिकैः आग्नेयास्त्रैः सुसज्जितान् आंग्लशासकान् रक्तपापं बिना पराभूय भारतदेशस्य स्वातंत्र्यं लब्धवन्तः। अहिंसायाः प्रभावात् शत्रवोऽपि मित्रवदाचरन्ति। क्रूरा अपि स्वदुष्टस्वभावं परित्यज्य सत्संगतिप्रभावात् उदारा भवन्ति। महर्षेः वाल्मीकेः जीवनवृत्तं नास्ति अविदितं केनापि संस्कृतविदुषा। अपकारिणः व्याघ्रादयोऽपि संसर्गवशात् हिंसावृत्तिं परित्यज्य अहिंसका भवन्ति इति 'सर्कस्' इत्याख्ये मनोरञ्जने दृष्टमेव सर्वैः।

यद्यपि हिंसावृत्तिः न सर्वथा त्याज्या, तथापि यत्र अहिंसया एव कार्यं सिद्ध्येत्, तत्र हिंसायाः प्रयोगः न कार्यः। प्रांयशः अस्माकं कार्याणि हिंसा विनाऽपि सिद्धानि स्युः तत्र हिंसा अनावश्यकी। तथापि सर्वत्र हिंसायाः अतिशयेन पालनमनुचितम्। यतः अहिंसया देशरक्षा कथमपि भवितुं नार्हति। अस्य प्रमाणं तु स्वतंत्रतावाप्तेः अन्नतरमेव पाकिस्तान-चीनयोः सङ्ग्रामम्। अत एव अहिंसा परमो धर्मः, इति योगिनामुपयोगिसिद्धान्तः। यतो हि योगप्रभावेण सिद्धिप्रभावेण च हिंसायामपि चतुर्दिशं अहिंसां कुर्वन्ति। गृहस्थानां कृते क्वचिद्हिंसा क्वचिदहिंसा यथायोगं समुचितम्। धर्मसंस्थापनार्थमपि दुष्कृतानां विनाशाय हिंसा भवति।

यद्यपि हिंसया लौकिकाभ्युन्नतिः, श्रीसमृद्धिः, शान्तिश्च लभ्यते, यथापि तत्सर्वं न पारमार्थिकम्। परमार्थसिद्धिस्तु सर्वभूतेषु आत्मवत् आचरणेनैव भवति। अहिंसा मानवसंस्कृतेः सर्वोत्तमा निष्पात्तिरिति नात्र संदेहः। साम्प्रतम् अस्मिन् जगति सर्वत्र हिंसायाः साम्राज्यं दृश्यते। राष्ट्रसंघर्षः, जातिसंघर्षः, वर्गसंघर्षः समुदायसंघर्षः, धर्मसम्प्रदाययोः संघर्षः समाचारपत्रेषु प्रतिदिनं प्रकाश्यते। कुत्राऽपि शान्तिव्यवस्था न दृश्यते। अत एव लोककल्याणाय मानवजातेः अभ्युत्थानाय विश्वशान्तिहेतवे चाहिंसाव्रतपालनं सम्प्रति परमावश्यकमिति। न केवलं जीवहिंसा परिहर्त्तव्या हरितलता वनस्पतिवृक्षादीनामपि पातनं परिहर्त्तव्यम्। ○○

आर्योद्देश्यरत्नमाला

- **मुक्ति के साधन** : अर्थात् जो पूर्वोक्त ईश्वर की कृपा स्तुति, प्रार्थना और उपासना का करना तथा धर्म का आचरण, पुण्य का करना, सत्संग, विश्वास, तीर्थसेवन, सत्पुरुषों का संग, परोपकारादि सब अच्छे कर्मों का करना और सब दुष्ट कर्मों से अलग रहना है, ये सब 'मुक्ति के साधन' कहाते हैं।
- **कर्ता** : जो स्वतंत्रता से कर्मों का करने वा है अर्थात् जिसके स्वाधीन सब साधन होते हैं, वह 'कर्ता' कहाता है।
- **कारण** : जिसको ग्रहण करके ही करने वाला किसी कार्य चीज को बना सकता है अर्थात् जिसके बिना कोई चीज बन ही नहीं सकती, वह 'कारण' कहाता है। सो तीन प्रकार का है।
- **उपादान कारण** : जिसको ग्रहण करके ही उत्पन्न होवे व कुछ बनाया जाय जैसा कि मिट्टी से घड़ा बनता है। उसको 'उपादान' चकहते हैं।
- **निमित्त कारण** : जो बनाने वाला है जैसा कि कुंभार घड़े के बनाता है, इस प्रकार के पदार्थो को 'निमित्त कारण' कहते हैं।

शिक्षक दिवस : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

जन्म दिवस
शत-शत नमन

महान व्यक्तित्व डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस को हर साल शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। वह अध्यापन पेशे के प्रति अध्याधिक समर्पित थे। ये कहा जाता है कि एक बार कुछ विद्यार्थियों द्वारा 5 सितंबर को उनका जन्मदिन मनाने के लिये उनसे आग्रह किया, इस पर उन्होंने कहा कि मेरा जन्मदिन मनाने के बजाय आप सभी को शिक्षकों को उनके महान कार्य और योगदान के लिये सम्मान देने के लिये इस दिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाना चाहिये। शिक्षक ही देश के भविष्य के वास्तविक आकृतिकार होते है अर्थात् देश का उज्जवल भविष्य विद्यार्थियों के बेहतर विकास से ही संभव है। देश में रहने वाले नागरिकों के भविष्य निर्माण के द्वारा शिक्षक राष्ट्र-निर्माण का कार्य करते है। लेकिन समाज में कोई भी शिक्षकों और उनके योगदान के बारे में नहीं सोचता था। लेकिन ये सारा श्रेय भारत के एक महान नेता डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को जाता है जिन्होंने अपने जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की सलाह दी। 1962 से हर वर्ष 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। शिक्षक हमें सिर्फ पढ़ाते ही नहीं है बल्कि वो हमारे व्यक्तित्व, विश्वास और कौशल स्तर को भी सुधारते हैं। वो हमें इस काबिल बनाते हैं कि हम किसी भी कठिनाई और परेशानियों का सामना कर सकें। हमें अपने जीवन में शिक्षक के द्वारा पढ़ाये गये सभी पाठ का अनुसरण करना चाहिये।

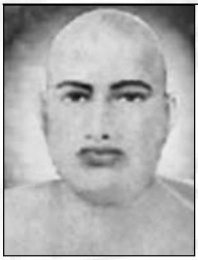

स्मृति दिवस
11 मई, शत-शत नमन

स्वामी श्री दर्शनानन्द सरस्वती

स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन एक आदर्श सन्यासी के रूप में गुजरा। उनका परमेश्वर में अटूट विश्वास एवं दर्शन शास्त्रों के स्वाध्याय से उन्नत हुई तर्क शक्ति बड़ों-बड़ों को उनका प्रशंसक बना लेती थी। संस्मरण उन दिनों का हैं जब स्वामी जी के मस्तिष्क में ज्वालापुर में गुरुकुल खोलने का प्रण हलचल मचा रहा था। एक दिन स्वामी जी हरिद्वार की गंगनहर के किनारे खेत में बैठे हुए गाजर खा रहे थे। किसान अपने खेत से गाजर उखाड़कर, पानी से धोकर बड़े प्रेम से खिला रहा था। उसी समय एक आदमी वहां पर से घोड़े पर निकला। उसने स्वामी जी को गाजर खाते देखा तो यह अनुमान लगा लिया की यह बाबा भूखा हैं। उसने स्वामी जी से कहा बाबा गाजर खा रहे हो भूखे हो। आओ हमारे यहां आपको भरपेट भोजन मिलेगा। स्वामी जी ने उसकी बातों को ध्यान से सुनकर पहचान कर कहा तुम ही सीताराम हो, मैंने सब कुछ सुना हुआ हैं। तुम्हारे जैसे पतित आदमी के घर का भोजन खाने से तो जहर खाकर मर जाना ही अच्छा हैं। जाओ मेरे सामने से चले जाओ। स्वामी जी को आर्यजगत् हमेशा याद करता रहेगा। गुरुकुल दनकौर, सिकंदराबाद उन्हीं की देन है।

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

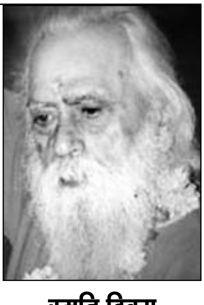

स्मृति दिवस
15 मई, शत-शत नमन

जनमानस को मंत्रमुग्ध करने वाले उपदेशों एवं व्याख्याओं से प्रभावित भक्तों के आग्रह पर स्वामी जी ने सर्वप्रथम 'स्वाध्याय-सर्वस्व' नामक लघु-ग्रंथ लिखा। इस लघु ग्रंथ पर पं. मोहन विद्यालंकार अमर स्वामी, स्वामी विद्यानंद विदेह की उत्साहजनक सम्मतियों ने स्वामी जी को अपने विचारों को कलमबद्ध करने के लिए प्रोत्साहित किया और मृत्युञ्जय सर्वस्व, उपनयन सर्वस्व, अग्निहोत्र सर्वस्व, उपहार सर्वस्व, दो पुटन के बीच, सत्यार्थ कल्पतरु, उद्देश्य सर्वस्व आदि अनेक ग्रंथों का प्रणयन हुआ। प्रवचन और साहित्य प्रचार का मुख्य आधार हैं, यह सोचकर वैदिक-साहित्य निर्माण में अपने नाम को सार्थक करते हुए स्वयं को दीक्षित कर दिया। उक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने गुरुवर्य के नाम से समर्पण शोध संस्थान की स्थापना की। विद्यार्थी काल से ही स्वामी जी संस्था स्थापित करने में रुचि रखते थे। अत: भटिंडा में उपदेशक विद्यालय की स्थापना कर डाली। पुन: स्वामी समर्पणानन्द जी के आदेश से गुरुकुल प्रभात आश्रम को इस प्रकार चलाया जैसा कि संस्थापक ही हों। आर्ष गुरुकुल नोएडा की नींव रखने में व अंतिम समय में अंतिम व्याख्यान व आशीर्वाद का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ। अग्निहोत्री ट्रस्ट हर वर्ष उनकी स्मृति में विशेष कार्यक्रम और विद्वानों को सम्मानित करता है। इनके द्वारा देशहित में किए गए कार्यों के लिए समस्त आर्यजगत ऋणी रहेगा।

स्वामी श्री रामेश्वरानन्द सरस्वती

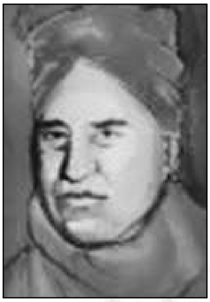

स्मृति दिवस
18 मई, शत-शत नमन

स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती जी आर्य समाज के तेजस्वी संन्यासी थे। आप उच्चकोटि के वक्ता थे तथा उत्तम विद्वान व विचारक थे। 1890 में आप का जन्म एक कृषक परिवार में हुआ। आप आरम्भ से ही मेधावी होने के साथ ही साथ विरक्त वृति के थे। आप उच्च शिक्षा न पा सके गांव में ही पाठशाला की साधारण सी शिक्षा प्राप्त की। आरम्भ से ही विरक्ति की धुन के कारण आप शीघ्र ही घर छोड़ कर चल दिए तथा काशी जा पहुंचे। यहां पर आप ने स्वामी कृष्णानन्द जी से संन्यास की दीक्षा ली। संन्यासी होने पर भी आप कुछ समय पौराणिक विचारों में रहते हुए इसका ही अनुगमन करते रहे किन्तु कुछ समय पश्चात ही आपका झुकाव आर्य समाज की ओर हुआ। आर्य समाज में प्रवेश के साथ ही आप को विद्या उपार्जन की धुन सवार हुई तथा आप गुरुकुल ज्वालापुर जा पहुंचे तथा आचार्य स्वामी शुद्ध बोध तीर्थ जी से संस्कृत व्याकरण पढ़ा। यहां से आप खुर्जा आए तथा यहां के निवास काल में दर्शन शास्त्र का अध्ययन किया। काशी में रहते हुए आप ने शास्त्रों का गहन व विस्तृत अध्ययन किया। इस प्रकार आपका अध्ययन का कार्य 21 वर्ष का रहा, जो 1935 ईश्वी में पूर्ण किया। स्वामी जी ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम में भी खूब भाग लिया।

विनायक दामोदर वीर सावरकर

जन्म दिवस
28 मई, शत-शत नमन

वीर सावरकर का जन्म 28 मई 1883 को भारत के महाराष्ट्र राज्य के नाशिक जिले के भांगुर गाव में हुआ था इनके पिता का नाम दामोदर पन्त सावरकर और माता का नाम राधाबाई था जब वीर सावरकर महज 9 साल के ही थे तो इनकी माता का हैजे की बीमारी से देहांत हो गया था और फिर माता की मृत्यु के पश्चात 7 साल बाद प्लेग जैसी भयंकर बीमारी के फैलने के कारण इनके पिता भी इस दुनिया को छोड़कर चले गये। इनका लालन पालन इनके बड़े भाई गणेश और नारायण दामोदर सावरकर तथा बहन नैनाबाई के देखरेख में हुआ। बचपन से वीर सावरकर पढ़ने-लिखने में तेज थे जिसके चलते आर्थिक तंगी के बावजूद इनके भाई ने इन्हें पढ़ने के लिए स्कूल भेजा फिर इसके पश्चात 1901 में वीर सावरकर ने शिवाजी हाईस्कूल नासिक से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण किया। बचपन से ही लिखने का शौक रखने वाले वीर सावरकर ने अपने पढ़ाई के दौरान कविताएं भी लिखना शुरू कर दिया था। इनका विवाह 1901 में यमुनाबाई के साथ हुआ जिसके बाद इनके आगे की पढाई के खर्च की जिम्मेदारी इनके ससुर ने उठाया। पढ़ाई के दौरान वीर सावरकर ने आजादी के लिए उस समय के युवा राजनेता बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चन्द्र पाल, लाला लाजपत राय जैसे नेताओं से प्रेरणा मिली। अंग्रेजों के खिलाफ देश के लिए लड़ने के कारण कालापानी की सजा मिली, जहां घोर यातनाएं दी गई पर वह अपने पथ से विचलित नहीं हुए।

क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा

पुण्य तिथि
31 मई, शत-शत नमन

श्यामजी कृष्ण वर्मा एक भारतीय क्रांतिकारी, वकील और पत्रकार थे। वो भारत माता के उन वीर सपूतों में से एक हैं जिन्होंने अपना सारा जीवन देश की आजादी के लिए समर्पित कर दिया। इंग्लैंड से पढ़ाई कर उन्होंने भारत आकर कुछ समय के लिए वकालत की और फिर कुछ राजघरानों में दीवान के तौर पर कार्य किया पर ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों से त्रस्त होकर वो भारत से इंग्लैण्ड चले गये। वह संस्कृत समेत कई और भारतीय भाषाओं के ज्ञाता थे। उनके संस्कृत के भाषण से प्रभावित होकर मोनियर विलियम्स ने वर्माजी को ऑक्सफोर्ड में अपना सहायक बनने के लिए निमंत्रण दिया था। उन्होंने 'इंडियन होम रूल सोसाइटी', 'इंडिया हाउस' और 'द इंडियन सोसिओलोजिस्ट' की स्थापना लन्दन में की थी। इन संस्थाओं का उद्देश्य था वहां रह रहे भारतीयों को देश की आजादी के बारे में अवगत कराना और छात्रों के मध्य परस्पर मिलन एवं विविध विचार-विमर्श। श्यामजी ऐसे प्रथम भारतीय थे, जिन्हें ऑक्सफोर्ड से एम.ए. और बार-एट-ला की उपाधियां मिलीं थीं। श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्टूबर 1857 को गुजरात के माण्डवी कस्बे में हुआ था। पिता का नाम श्रीकृष्ण वर्मा और माता का नाम गोमती बाई था। जब बालक श्यामजी मात्र 11 साल के थे तब उनकी माता का देहांत हो गया जिसके बाद उनका लालन-पालन उनकी दादी ने किया। 31 मई को जिनकी पुण्यतिथि है। इनके द्वारा देश हित में किये गये कार्यों के लिए देश इनका सदैव ऋणी रहेगा। महर्षि दयानन्द के वह मानस पुत्र थे।

क्या हनुमान आदि वानर-बंदर थे...

विवेक आर्य

इन प्रश्नों का उत्तर वाल्मीकि रामायण से ही प्राप्त करते है।

1. प्रथम 'वानर' शब्द पर विचार करते है। सामान्य रूप से हम 'वानर' शब्द से यह अभिप्रेत कर लेते है कि वानर का अर्थ होता है 'बंदर' परंतु अगर इस शब्द का विश्लेषण करे तो वानर शब्द का अर्थ होता है वन में उत्पन्न होने वाले अन्न को ग्रहण करने वाला। जैसे पर्वत अर्थात गिरि में रहने वाले और वहां का अन्न ग्रहण करने वाले को गिरिजन कहते है। उसी प्रकार वन में रहने वाले को वानर कहते है। वानर शब्द से किसी योनि विशेष, जाति, प्रजाति अथवा उपजाति का बोध नहीं होता।

2. सुग्रीव, बालि आदि का जो चित्र हम देखते है उसमें उनकी पूंछ लगी हुई दिखाई देती हैं। परंतु उनकी स्त्रियों के कोई पूंछ नहीं होती? नर-मादा का ऐसा भेद संसार में किसी भी वर्ग में देखने को नहीं मिलता। इसलिए यह स्पष्ट होता हैं की हनुमान आदि के पूंछ होना केवल एक चित्रकार की कल्पना मात्र है।

3. किष्किंधा कांड (3/28-32) में जब श्री रामचंद्र जी महाराज की पहली बार ऋष्यमूक पर्वत पर हनुमान से भेंट हुई तब दोनों में परस्पर बातचीत के पश्चात रामचंद्र जी लक्ष्मण से बोले-

न अन् ऋग्वेद विनीतस्य न अ यजुर्वेद धारिणः। न अ-साम वेद विदुषः शक्यम् एवम् विभाषितुम्।। 4/3/28

अर्थात्- ऋग्वेद के अध्ययन से अनभिज्ञ और यजुर्वेद का जिसको बोध नहीं है तथा जिसने सामवेद का अध्ययन नहीं किया है, वह व्यक्ति इस प्रकार परिष्कृत बातें नहीं कर सकता। निश्चय ही इन्होंने सम्पूर्ण व्याकरण का अनेक बार अभ्यास किया है, क्योंकि इतने समय तक बोलने में इन्होंने किसी भी अशुद्ध शब्द का उच्चारण नहीं किया है। संस्कार संपन्न, शास्त्रीय पद्धति से उच्चारण की हुई इनकी वाणी ह्रदय को हर्षित कर देती है।

5. सुंदर कांड (30/18-20) में जब हनुमान अशोक वाटिका में राक्षसियों के बीच में बैठी हुई सीता को अपना परिचय देने से पहले हनुमान जी सोचते है- 'यदि द्विजाति (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य) के समान परिमार्जित संस्कृत भाषा का प्रयोग करूंगा तो सीता मुझे रावण समझकर भय से संत्रस्त हो जाएगी। मेरे इस वनवासी रूप को देखकर तथा नागरिक संस्कृत को सुनकर पहले ही राक्षसों से डरी हुई यह सीता और भयभीत हो जाएगी। मुझको कामरूपी रावण समझकर भयातुर विशालाक्षी सीता कोलाहल आरंभ कर देगी। इसलिए मैं सामान्य नागरिक के समान परिमार्जित भाषा का प्रयोग करूंगा। इस प्रमाणों से यह सिद्ध होता हैं की हनुमान जी चारों वेद, व्याकरण और संस्कृत सहित अनेक भाषायों के ज्ञाता भी थे।

5. हनुमान जी के अतिरिक्त अन्य वानर जैसे की बालि पुत्र अंगद का भी वर्णन वाल्मीकि रामायण में संसार के श्रेष्ठ महापुरुष के रूप में किष्किन्धा कांड 54/2 में हुआ है। हनुमान बालि पुत्र अंगद को अष्टांग बुद्धि से सम्पन्न, चार प्रकार के बल से युक्त और राजनीति के चौदह गुणों से युक्त मानते थे।

बुद्धि के यह आठ अंग हैं- सुनने की इच्छा, सुनना, सुनकर धारण करना, ऊहापोह करना, अर्थ या तात्पर्य को ठीक ठीक समझना, विज्ञान व तत्वज्ञान।

चार प्रकार के बल हैं- साम, दाम, दंड और भेद। राजनीति के चौदह गुण हैं- देशकाल का ज्ञान, दृढ़ता, कष्टसहिष्णुता, सर्वविज्ञानता, दक्षता, उत्साह, मंत्रगुप्ति, एकवाक्यता, शूरता, भक्तिज्ञान, कृतज्ञता, शरणागत वत्सलता, अधर्म के प्रति क्रोध और गंभीरता। भला इतने गुणों से सुशोभित अंगद बंदर कहां से हो सकते है?

6. वेदज्ञ और राजमन्त्री हनुमान जी :

सचिवोऽयं कपीन्द्रस्य सुग्रीवस्य महात्मनः। तमेव कांक्षमाणस्य ममान्तिक मिहागतः।। ना ऋग्वेद विनीतस्य ना यजुर्वेदधरिणः। ना सामवेदविदुषः शक्यमेवविभाषितम्।। (वल्मिक रामायण किष्किन्धा काण्ड सर्ग-3)

अर्थात् : हे लक्ष्मण! यह (हनुमान जी) सुग्रीव के मंत्री हैं और उनकी इच्छा से यह मेरे पास आये हैं। जिस व्यक्ति ने ऋग्वेद को नहीं पढ़ा है, जिसने यजुर्वेद को धारण नहीं किया है, जो सामवेद का पंडित नहीं है, वह व्यक्ति, जैसी वाणी यह बोल रहे हैं वैसी नहीं बोल सकता है। शब्दशास्त्र के पण्डित हनुमान जी-

नूनं व्याकरण कृत्मनमनेन बहुधा श्रुतम्। बहुव्यवहारतानेन न किञ्चिदशाब्दितम्।। (वाल्मीकि रामायण किष्किंधा कांड सर्ग-3)

अर्थात् : इन्होंने निश्चित ही सम्पूर्ण व्याकरण पढ़ा है क्योंकि इन्होंने अपने सम्पूर्ण वर्तालाप में एक भी अशुद्ध शब्द का उच्चारण नहीं किया है ।

श्रीरामो लक्ष्मणं प्राह पश्यैनं बटूरूपिणाम। शब्दशास्त्रमशेण श्रुतं नूनमनेकधा।। अनेकभाषितं कृत्सनं न किञ्चिदपशब्दितम्। ततः प्राह हनुमन्तं राघवो ज्ञान विग्रहः।।

(वाल्मीकि रामायण किष्किन्धा कांड सर्ग-1)

अर्थात् : राम ने कहा 'हे लक्ष्मण! इस ब्रह्मचारी को देखो। अवश्य ही इसने सम्पूर्ण व्याकरण कई बार भली प्रकार से पढ़ा है। देखो! इतनी बातें कहीं किन्तु इसके बोलने में कहीं कोई एक भी अशुद्धि नहीं हुई।

7. अंगद की माता तारा के विषय में मरते समय किष्किन्धा कांड 16/12 में बालि ने कहा था कि-

'सुषेन की पुत्री यह तारा सूक्ष्म विषयों के निर्णय करने तथा नाना प्रकार के उत्पातों के चिन्हों को समझने में सर्वथा निपुण है। जिस कार्य को यह अच्छा बताए, उसे नि:संग होकर करना। तारा की किसी सम्मति का परिणाम अन्यथा नहीं होता। ऐसे गुण विशेष मनुष्यों में ही संभव है।

8. किष्किंधा कांड (25/30) में बालि के अंतिम संस्कार के समय सुग्रीव ने आज्ञा दी-मेरे ज्येष्ठ बंधु आर्य का संस्कार राजकीय नियन के अनुसार शास्त्र अनुकूल किया जाये। किष्किंधा कांड (26/10) में सुग्रीव का राजतिलक हवन और मंत्रादि के साथ विद्वानों ने किया। क्या बंदरों में शास्त्रीय विधि से संस्कार होता हैं?

9. जहां तक जटायु का प्रश्न है, वह गिद्ध नामक पक्षी नहीं था। जिस समय रावण सीता का अपहरण कर उसे ले जा रहा था। तब जटायु को देख कर सीता ने कहा-

जटायो पश्य मम आर्य ह्रियमाणम् अनाथ वत्। अनेन राक्षसेंद्रेण करुणम् पाप कर्मणा।। अरण्यक-49/38

हे आर्य जटायु! यह पापी राक्षस पति रावण मुझे अनाथ की भांति उठाये ले जा रहा है।

कथम् तत् चन्द्र संकाशम् मुखम् आसीत् मनोहरम् ।
सीतया कानि च उक्तानि तस्मिन् काले द्विजोतम ।। 68/6

अर्थात् : यहां जटायु को आर्य और द्विज कहा गया है। यह शब्द किसी पशु-पक्षी के संबोधन में नहीं कहे जाते। रावण को अपना परिचय देते हुए जटायु ने कहा-

जटायुः नाम नाम्ना अहम् गृध्र राजो महाबलः ।
अरण्यक 50/4

अर्थात् : मैं गृध कूट का भूतपूर्व राजा हूं और मेरा नाम जटायु है। यह भी निश्चित हैं की पशु-पक्षी किसी राज्य का राजा नहीं हो सकते। इन सभी प्रमाणों से यह सिद्ध होता हैं कि जटायु पक्षी नहीं था, अपितु एक मनुष्य था। जो अपनी वृद्धावस्था में जंगल में वास कर रहा था। ■■

प्रत्येक व्यक्ति सुखी होना चाहता है

100% सुखी होना चाहता है। इसके साथ-साथ वह दुखों से भी छूटना चाहता है, 100% दुखों से छूटना चाहता है। परंतु ये दोनों ही बातें संसार में देखने को नहीं मिलती। कोई व्यक्ति संसार में अब तक ऐसा पैदा नहीं हुआ और होगा भी नहीं, जो करोड़ों वर्षों तक, लगातार जीते जी, 100% सुखी हो और 100% दुखों से छूट गया हो। ये दोनों बातें मोक्ष में तो संभव हैं। और यदि आप कुछ देर के लिए अच्छी गहरी नींद में सो जाएं, तो वहां भी ये दोनों बातें हो जाती हैं। अथवा समाधि में भी ये दोनों बातें संभव हो जाती हैं।

परंतु समाधि तो सबको प्राप्त नहीं है। निद्रा जरूर प्राप्त होती है। फिर भी निद्रा भी 6-7 घंटे की होती है, अर्थात् व्यक्ति अधिक से अधिक 6-7 घंटे दुखों से छूट जाता है। लेकिन वह बहुत लंबे समय तक-करोड़ों वर्षों तक ऐसा चाहता है, कि वह सदा सुखी रहे, 100% सुखी रहे, और 100% दुखों से छूट जाए। अब यह बात तो सिर्फ मोक्ष में ही हो सकती है।

चलो ठीक है, जब मोक्ष होगा, तब होगा। उसके लिए भी आपको बहुत परिश्रम करना होगा। परंतु जब तक संसार में जीवित हैं, तब तक कैसे जीएं? उसका उपाय है कि अधिक से अधिक सुखी रहें, और कम से कम दुखी हों। अब यह कैसे होगा? इसका उपाय है कि दुख के कारण को ढूंढें, एक कारण है, दूसरे लोगों से अधिक आशाएं रखना अर्थात एक्सपेक्टेशन करना।

जितनी आप दूसरे लोगों से एक्सपेक्टेशन अधिक रखेंगे, उतने ही आप अधिक दुखी रहेंगे। क्योंकि सब लोग आपकी सभी आशाओं को पूरा नहीं कर सकते। जब आप की आशाएं पूरी नहीं होती, तब आप दुखी होते हैं। कुछ आशाएं पूरी हो भी जाएं, तो वे वहां समाप्त नहीं होती, बल्कि और बढ़ती जाती हैं। जो आशाएं पूरी नहीं हो पाती, वे दुख देती हैं। इसलिए यह पद्धति सुख प्राप्ति की नहीं है, बल्कि दुखों को बढ़ाने वाली है। तो फिर क्या करना चाहिए?

सुखी होने के लिए तथा दुखों से बचने के लिए, दूसरे लोगों से कम से कम आशाएं रखें। ईश्वर पर अधिक विश्वास रखें स्वयं पर अधिक विश्वास रखें । ईश्वर और स्वयं के भरोसे जीने का प्रयास करें। दूसरे लोग यदि आपकी आशा पूरी कर दें, तो ठीक है। यदि नहीं करते तो दुख से बचने के लिए मन में सोचें, 'कोई बात नहीं'।

■ **स्वामी विवेकानंद परिव्राजक**

ओ३म् : जीवन का उद्देश्य क्या है...

जीवन का उद्देश्य उसी चेतना को जानना है – जो जन्म और मरण के बंधन से मुक्त है। उसे जानना ही मोक्ष है।

जन्म और मरण के बंधन से मुक्त कौन है?

जिसने स्वयं को, उस आत्मा को जान लिया–वह जन्म और मरण के बंधन से मुक्त है।

संसार में दु:ख क्यों है?

लालच, स्वार्थ और भय ही संसार के दु:ख का मुख्य कारण हैं।

ईश्वर ने दु:ख की रचना क्यों की?

ईश्वर ने संसार की रचना की और मनुष्य ने अपने विचार और कर्मों से दु:ख और सुख की रचना की।

क्या ईश्वर है? कौन है वे? क्या रूप है उनका? क्या वह स्त्री है या पुरुष?

कारण के बिना कार्य नहीं। यह संसार उस कारण के अस्तित्व का प्रमाण है। तुम हो, इसलिए वे भी है– उस महान कारण को ही आध्यात्म में 'ईश्वर' कहा गया है। वह न स्त्री है और ना ही पुरुष।

भाग्य क्या है?

हर क्रिया, हर कार्य का एक परिणाम है। परिणाम अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी हो सकता है। यह परिणाम ही भाग्य है तथा आज का प्रयत्न ही कल का भाग्य है।

इस जगत में सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है?

रोज हजारों–लाखों लोग मरते हैं और उसे सभी देखते भी हैं, फिर भी सभी को अनंत–काल तक जीते रहने की इच्छा होती है। इससे बड़ा आश्चर्य ओर क्या हो सकता है।

किस चीज को गंवाकर मनुष्य धनी बनता है?

लोभ।

कौन सा एकमात्र उपाय है जिससे जीवन सुखी हो जाता है?

अच्छा स्वभाव ही सुखी होने का उपाय है।

किस चीज़ के खो जाने पर दु:ख नहीं होता?

क्रोध।

धर्म से बढ़कर संसार में और क्या है?

दया।

क्या चीज दूसरों को नहीं देनी चाहिए?

तकलीफें, धोखा...।

क्या चीज है, जो दूसरों से कभी भी नहीं लेनी चाहिए?

इज्जत, किसी की हाय।

ऐसी चीज जो जीवों से सब कुछ करवा सकती है?

मज़बूरी।

दुनिया की अपराजित चीज?

सत्य...।

दुनिया में सबसे ज्यादा बिकने वाली चीज?

झूठ...।

करने लायक सुकून का कार्य?

परोपकार।

दुनिया की सबसे बुरी लत?

मोह।

दुनिया का स्वर्णिम स्वप्न?

जिंदगी।

दुनिया की अपरिवर्तनशील चीज?

मौत।

ऐसी चीज़ जो स्वयं के भी समझ ना आये?

अपनी मूर्खता।

दुनिया में कभी भी नष्ट–नश्वर न होने वाली चीज?

आत्मा और ज्ञान।

कभी न थमने वाली चीज?

समय।

■■

स्वामी महर्षि दयानन्द जी की क्षमाशीलता

आर्य समाज के तपोमूर्ति एवं विद्वान संन्यासी श्री अमरस्वामी सरस्वती के पिता अरणियां (जिला बुलन्दशहर) निवासी ठाकुर टीकम सिंह ने स्वामी दयानन्द जी के दर्शन कर्णवास में गंगा के किनारे किये थे।

ठाकुर टीकम सिंह ने स्वामी जी के संबंध में बताया था कि उनका शरीर लम्बा एवं सुडौल था। उनकी आवाज बहुत ऊंची, गूंजने वाली तथा मधुर, गम्भीर थी। व्याख्यान दूर–दूर तक स्पष्ट सुनाई देता था।

एक दिन व्याख्यान समाप्त होने पर दो तीन गंवारों ने उन पर धूल फेंक दी। धूल फेंकते ही भीड़ में हल्ला मच गया और कर्णवास के भक्त ठाकुर लोग मारो, पकड़ो की आवाज करने लगे। इस पर श्री महाराज ने गर्ज कर कहा, ये बच्चे हैं, इन्हें कुछ मत कहो। इस पर भक्तगण बोल पड़े– महाराज ये बच्चे नहीं हैं, दाढ़ी, मूंछों वाले हैं। उत्तर में महाराज ने पुन: उसी स्वर में कहा–'जिनकी बुद्धि थोड़ी होती है, दाढ़ी, मूंछ होने पर भी वे बच्चे ही कहलाते हैं। इनको कुछ भी नहीं कहना चाहिए।'

यह थी स्वामी दयानन्द की क्षमाशीलता।

स्रोत : नवजागरण के पुरोधा, पृ. 550, 1983 संस्करण

OO डॉ. भवानीलाल भारतीय

महाराणा प्रताप सिंह

जयंती : 9 मई, शत्-शत् नमन

महाराणा प्रताप का जन्म उनका जन्म 9 मई 1540 को राजस्थान के कुम्भलगढ़, दुर्ग में महाराणा उदयसिंह एवं माता राणी जयवंत कंवर के घर हुआ था। महाराणा प्रताप की माता का नाम जयवंता बाई था, जो पाली के सोनगरा अखैराज की बेटी थी। महाराणा प्रताप को बचपन में कीका के नाम से पुकारा जाता था। महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक गोगुन्दा में हुआ। उनका नाम इतिहास में वीरता और दृढ प्रण के लिये अमर है। उन्होंने कई सालों तक मुगल सम्राट अकबर के साथ संघर्ष किया। महाराणा प्रताप सिंह ने मुगलों को कईं बार युद्ध में भी हराया।

1576 के हल्दी घाटी युद्ध में 20,000 राजपूतों को साथ लेकर राणा प्रताप ने मुगल सरदार राजा मानसिंह के 80,000 की सेना का सामना किया। शत्रु सेना से घिर चुके महाराणा प्रताप को झाला मानसिंह ने आपने प्राण देकर बचाया और महाराणा को युद्ध भूमि छोड़ने के लिए बोला। शक्ति सिंह ने आपना अश्व देकर महाराणा को बचाया। प्रिय अश्व चेतक की भी मृत्यु हुई। यह युद्ध तो केवल एक दिन चला परन्तु इसमें 17,000 लोग मारे गए।

मेवाड़ को जीतने के लिये अकबर ने सभी प्रयास किये। महाराणा की हालत दिन-प्रतिदिन चिंताजनक होती चली गई। 25,000 राजपूतों को 12 साल तक चले उतना अनुदान देकर भामा शाह भी अमर हुआ। महाराणा प्रताप ने अपने जीवन में कुल 11 शादियां की थी। महाराणा प्रताप ने भी अकबर की अधीनता को स्वीकार नहीं किया था। अकबर ने महाराणा प्रताप को समझाने के लिये चार शान्ति दूतों को भेजा। हल्दीघाटी का युद्ध : यह युद्ध 18 जून 1576 ईस्वी में मेवाड़ तथा मुगलों के मध्य हुआ था। इस युद्ध में मेवाड़ की सेना का नेतृत्व महाराणा प्रताप ने किया था। इस युद्ध में महाराणा प्रताप की तरफ से लड़ने वाले एकमात्र मुस्लिम सरदार थे- हकीम खां सूरी। इस युद्ध में मुगल सेना का नेतृत्व मानसिंह तथा आसफ खां ने किया। इस युद्ध का आंखों देखा वर्णन अब्दुल कादिर बदायूनीं ने किया। इस युद्ध को आसफ खां ने अप्रत्यक्ष रूप से जेहाद की संज्ञा दी। इस युद्ध में बींदा के झालामान ने अपने प्राणों का बलिदान करके महाराणा प्रताप के जीवन की रक्षा की।

1579 से 1585 तक पूर्व उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार और गुजरात के मुगल अधिकृत प्रदेशों में विद्रोह होने लगे थे और महाराणा भी एक के बाद एक गढ़ जीतते जा रहे थे अत: परिणामस्वरूप अकबर उस विद्रोह को दबाने में उल्झा रहा और मेवाड़ पर से मुगलो का दबाव कम हो गया। महाराणा की सेना ने मुगल चौकियों पर आक्रमण शुरू कर दिए और तुरंत ही उदयपूर समेत 36 महत्वपूर्ण स्थान पर फिर से महाराणा का अधिकार स्थापित हो गया। महाराणा प्रताप ने जिस समय सिंहासन ग्रहण किया, उस समय जितने मेवाड़ की भूमि पर उनका अधिकार था, पूर्ण रूप से उतने ही भूमि भाग पर अब उनकी सत्ता फिर से स्थापित हो गई थी। बारह वर्ष के संघर्ष के बाद भी अकबर उसमें कोई परिवर्तन न कर सका। और इस तरह महाराणा प्रताप समय की लंबी अवधि के संघर्ष के बाद मेवाड़ को मुक्त करने में सफल रहे और ये समय मेवाड़ के लिए एक स्वर्ण युग साबित हुआ। मेवाड़ पर लगा हुआ अकबर ग्रहण का अंत 1585 में हुआ। उसके बाद महाराणा प्रताप उनके राज्य की सुख-सुविधा में जुट गए, परंतु दुर्भाग्य से उसके ग्यारह वर्ष के बाद ही 19 जनवरी 1597 में अपनी नई राजधानी चावंड में उनकी मृत्यु हो गई। महाराणा प्रताप सिंह के डर से अकबर अपनी राजधानी लाहौर लेकर चला गया और महाराणा के स्वर्ग सीधरने के बाद आगरा ले आया।

अकबर महाराणा प्रताप का सबसे बड़ा शत्रु था, पर उनकी यह लड़ाई कोई व्यक्तिगत द्वेष का परिणाम नहीं थी, हालांकि अपने सिद्धांतों और मूल्यों की लड़ाई थी। एक वह था जो अपने क्रूर साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था, जब की एक तरफ ये थे जो अपनी भारत मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए संघर्ष कर रहे थे। महाराणा प्रताप की मृत्यु पर अकबर को बहुत ही दु:ख हुआ क्योंकि ह्रदय से वो महाराणा प्रताप के गुणों का प्रशंसक था और अकबर जनता था की महाराणा जैसा वीर कोई नहीं है इस धरती पर। यह समाचार सुन अकबर रहस्यमय तरीके से मौन हो गया और उसकी आंख में आंसू आ गए। ■■

A Biographical Sketch of Pandit Gurudatta Vidyarthi

(Published on the occasion of Pt Gurudutta Vidyarthi Nirvan Divas)

Pandit Gurudatta Vidyarthi is recognized to have been the greatest achievement of Rishi Dayananda for his ancient Aryan church. The dying glance of the Rishi had miraculously transformed the mettle which was there in the young intrepid scholar. Had not death cut short his scholastic career so early, the Arya Samaj and through it the whole world of religious and metaphysical though may have been considerably enriched by his erudite philosophic contributions, of which the few dissertations and brief discourse he could, in the midst of his manifold activities, find time to write, gave sure promise.

An unmistakable vein of sincere love of truth for which no sacrifice of personal glory and earthly possession and comfort was too great, runs through them all. This marks Gurudatta out as a genuine philosopher, whose craving for spiritual light was not simply intellectual, it was the innermost call of his disconsolate soul. He it was who recognized in the last glance of Rishi Dayananda the soul of a seer, anxious to save a money-mad world from the dismal abyss of gross materialism, to guide it away by the help of the eternal light of the Veda to the empyrean heights of Spiritual Bliss. In that departing glance he read a message, a command to take up the challenge which the asuri demonical, forces of Mammon were throwing out to the ancient diava, divine, culture of the Rishis.

The young boy of nineteen took the challenge up, and coming of a warlike race fought to the last on the side of truth and righteousness. His was the death of a hero who, like another young boy whom Muse glorifies as having died on the station of his duty in another sphere. Pandit Gurudatta was the last male child of Lala Radhakishen Sardana of Multan, whose ancestors had distinguished themselves in the field both, of letters and arms. He was born on 26th April 1864. His grandfather was the ambassador of Nawab of Bahawalpur in the court of the Amir of Kabul. From him he inherited an aptitude from Persian which by a little training in the primary classes gave him a working mastery of that language so that he could in his boyhood dip into the deepest waters of the Persian literature. He conceived a fondness for Samskrita too in his schooldays. And the first book that after his study of the Samskrita Priimer fell into the young boy's hands was the Rig Vedadi Bhashya Bhumika of Swami Dayananda.

He forthwith approached the authorities of Arya Samaj at Multan and challenged then to either make arrangements for his study of the Ashtadhyayi and the Vedas or accept that the scriptures for which they claimed infallibility were only trash. The alternatives proposed appear to us to be an index to his sinner nature. In his heart of hearts he was convinced of the intellectual and spiritual worth of the Vedas, an introduction to which by the Rishi of the time he had already read.It was his impatience, and irresistible zeal to read more which prompted him to the blasphemous insinuation that the Vedas could, if the were not taught him, be regarded as trash. The Multan Arya Samaj engaged a Pandit who found it beyond his learning and pedagogic capacity to satisfy the little Vidyarthi.

■■ **Continue next Edition....**

कोई मेरा बुरा करे वो उसका कर्म है!
मैं किसी का बुरा न करूँ यह मेरा धर्म है!!

ना तो देर है ना अंधेर है,
तेरे कर्मों का यह सब खेल है।
ना तो देर है न अंधेर है.....

लाखों तीर्थ जाकर नहाले,
मिटते नहीं कभी कर्मों के ताले।
नेकी की मन में ज्योति जला ले,
और जीवन में करले उजाले।
ना तो देर है ना अंधेर है......

नेकी जगत में जो तू करेगा,
सर पर तेरे प्रभु हाथ धरेगा।
मुख से ना कुछ भी कहना पड़ेगा,
बिना मांगे प्रभु घर को भरेगा।
ना तो देर है ना अंधेर है.....

अपना कर्म ही सुख देता है,
अपना कर्म ही दुःख देता है।
कर्म बना जीवन देता है,
कर मिटा जीवन देता है।
ना तो देर है न अंधेरे है.....

हमें ही सुपथ पर चलना ना आये,
प्रभु तो सबको चलना सिखाये।
वह तो जरा भी ना तरसाये,
हमको ही दिल से कहना न आये।
ना तो देर है न अंधेरे है.....
तेरे कर्मों का यह सब फेर है।।

➲ आर्य देवेन्द्र गुप्ता, इंदिरापुरम, गाजि.

मोदी जी की तरह खादी में
कल हम गए एक शादी में!!

चारों तरफ डेटॉल और फिनायल
की खुशबू महक रही थी
सिर्फ करोना वाइरस की ही
चर्चा चहक रही थी

रिश्तेदार मिल रहे थे
आपस में हंसते-हंसते
हाथ मिलाने की बजाय
कर रहे थे... सिर्फ नमस्ते

सब दूर-दूर खड़े थे
शादी वाले हॉल में
मॉस्क ही... मॉस्क रखे थे
पहली-पहली स्टॉल में

इत्र वाले को मिला हुआ था
सैनेटाइजर छिड़कने का...टॉस्क
महिलाएं पहने हुए थी
साड़ी से मैचिंग वाला...मॉस्क

दूल्हा-दुल्हन जमे स्टेज पर
थोड़ा दूर-दूर बैठकर
वरमाला भी पहनाई गई
एक दूजे पर... फेंककर

हमने भी इवेंट को देखा
स्क्रीन पे थोड़ा दूर से
मेकअप दुल्हन का भी
किया गया था कपूर से

फेरों में भी उनके हाथ
एक-दूसरे को नहीं थमाए गए
और तो छोड़ो उनके फेरे भी
सौ मीटर दूर से कराए गये

इधर हम थूंकने गए
अपने पान की पीक
उधर दूल्हे को आ गई
बड़ी जोर से छींक

एक सन्नाटा सा छा गया
उस पंढाल में चारों ओर
दुल्हन को गुस्सा आ गया और
चली गई नहाने मंडप को छोड़

मॉफी लगा मांगने सबसे
तब दूल्हे का बाप
रिश्तेदार एक दूजे की
शक्ल रहे थे ताक

छोड़कर खाना भूखे ही
मेहमान घर को भागने लगे
मेहमान तो छोड़ो हलवाई भी
बोरिया-बिस्तर बांधने लगे

हम शादी में जाकर भी
यारों रह गए भूखे सरीखे
जैसी हम पर बीती वैसी
किसी पर भी ना बीते

करोना देवी मेरी तुमसे
एक विनती है हाथ जोड़कर
इस दुनिया से अब तुम जाओ
जल्दी ही मुंह मोड़कर

लेकिन सबक जरूर सिखाना
तुम उनको सीना तान कर
जो महंगा सामान बेचकर
लूट रहे है लोगों को तेरे नाम पर।।

रामायण में भोग नहीं, त्याग है

भरत जी नंदिग्राम में रहते हैं, शत्रुघ्न जी उनके आदेश से राज्य संचालन करते हैं। एक रात की बात हैं, माता कौशल्या जी को सोते में अपने महल की छत पर किसी के चलने की आहट सुनाई दी। नींद खुल गई। पूछा कौन हैं?

मालूम पड़ा श्रुतिकीर्ति जी हैं। नीचे बुलाया गया। श्रुतिकीर्ति जी, जो सबसे छोटी हैं, आईं, चरणों में प्रणाम कर खड़ी रह गईं। माता कौशिल्या जी ने पूछा, श्रुति! इतनी रात को अकेली छत पर क्या कर रही हो बिटिया? क्या नींद नहीं आ रही? शत्रुघ्न कहां हैं?

श्रुतिकीर्ति की आंखें भर आईं, मां की छाती से चिपटी, गोद में सिमट गईं, बोलीं, मां उन्हें तो देखे हुए तेरह वर्ष हो गए। उफ! कौशल्या जी का ह्रदय काँप गया। तुरंत आवाज लगी, सेवक दौड़े आए। आधी रात ही पालकी तैयार हुई, आज शत्रुघ्न जी की खोज होगी, मां चली। आपको मालूम है शत्रुघ्न जी कहां मिले? अयोध्या जी के जिस दरवाजे के बाहर भरत जी नंदिग्राम में तपस्वी होकर रहते हैं, उसी दरवाजे के भीतर एक पत्थर की शिला हैं, उसी शिला पर, अपनी बांह का तकिया बनाकर लेटे मिले। मां सिराहने बैठ गईं, बालों में हाथ फिराया तो शत्रुघ्न जी ने आंखें खोलीं, मां! उठे, चरणों में गिरे, मां! आपने क्यों कष्ट किया? मुझे बुलवा लिया होता।

मां ने कहा, शत्रुघ्न! यहां क्यों? शत्रुघ्न जी की रुलाई फूट पड़ी, बोले- मां! भैया राम जी पिताजी की आज्ञा से वन चले गए, भैया लक्ष्मण जी उनके पीछे चले गए, भैया भरत जी भी नंदिग्राम में हैं, क्या ये महल, ये रथ, ये राजसी वस्त्र, विधाता ने मेरे ही लिए बनाए हैं? माता कौशल्या जी निरुत्तर रह गईं।

देखो यह रामकथा हैं- यह भोग की नहीं त्याग की कथा हैं, यहां त्याग की प्रतियोगिता चल रही हैं और सभी प्रथम हैं, कोई पीछे नहीं रहा। चारों भाइयों का प्रेम और त्याग एक-दूसरे के प्रति अद्भुत-अभिनव और अलौकिक हैं।

मानव कितने भी प्रयत्न कर ले
अंधेरे में छाया
बुढ़ापे में काया
और
अंत समय मे माया
किसी का साथ नहीं देता
कर्म करो तो फल मिलता है
आज नहीं तो कल मिलता है
जितना गहरा अधिक हो कुंआ
उतना मीठा जल मिलता है
जीवन के हर कठिन प्रश्न का
जीवन से ही हल मिलता है।।

घर पर रहें, सुरक्षित रहें

'विद्या दान सबसे बड़ा दान है'

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा ''आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति (पं)'' द्वारा संचालित वैदिक शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र, आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा में स्थापित पिछले 27 वर्षो से ब्रह्मचारियों को विद्वान बना रहा है। जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर रहे हैं। इस समय 108 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आर्ष गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिन-रात चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर गुरुकुल को सहयोग देकर 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है' में सहयोगी बनें। संस्था में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। केवल भोजन शुल्क ही लिया जाता है। कृपया उदार ह्दय से आप सहयोग 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010112345, IFSC- UTB10SCN560 में भेजकर सूचित करें ताकि आपको पावती (रसीद) भेजी जा सके। 'आर्ष गुरुकुल को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80जी के अंतर्गत कर मुक्त है।' धन्यवाद!

(आर्य कै. अशोक गुलाटी)
प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', मो. : 9871798221, 7011279734
उपप्रधान, आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा

स्वामी श्री दीक्षानंद सरस्वती पुण्यतिथि पर विशेष

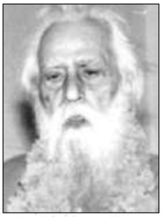

स्वामी दीक्षानन्द का प्रचारक रूप—१९५६ में गुरुकुल प्रभात आश्रम छोड़ने के बाद श्री मनोहरलाल जी ने इनका परिचय **पं० नरेन्द्र जी** मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, हैदराबाद से कराया। निजामाबाद आर्यसमाज में इन्हें परखा गया। सोने की पहचान जोहरी ने कर ली और ग्राम-ग्राम, नगर-नगर वेद-प्रचार की दुन्दुभि इनके द्वारा बजती रही। हैदराबाद के आसपास ही नहीं, पं० नरेन्द्र जब तक जीवित रहे आचार्य कृष्ण के अलावा कोई दूसरा उन्हें पसन्द ही नहीं आया और सर्वत्र पत्र लिखते कि प्रचार व उपदेश के लिए आचार्य कृष्ण को ही बुलाएँ। इस प्रकार **आन्ध्र, महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, उ०प्र० एवं पंजाब** आदि में वेद-प्रचारार्थ भ्रमण किया। समय ने इन्हें इतना प्रसिद्ध कर दिया कि देश ही नहीं विदेशों में भी **मॉरीशस, दक्षिणी अफ्रीका, डरबन, नैरोबी, केन्या, पूर्वी अफ्रीका** आदि देशों में जाकर **वेद-प्रचार की दुन्दुभि** बजाई।

स्वामी दीक्षानन्द का लेखक रूप—जनमानस को मन्त्र-मुग्ध करने वाले उपदेशों एवं व्याख्याओं से प्रभावित भक्तों के आग्रह पर स्वामी जी ने सर्वप्रथम **''स्वाध्याय-सर्वस्व''** नामक लघु-ग्रन्थ लिखा। इस लघु-ग्रन्थ पर पं० मनोहर विद्यालङ्कार अमर स्वामी, स्वामी विद्यानन्द विदेह की उत्साहजनक सम्मतियों ने स्वामी जी को अपने विचारों को कलमबद्ध करने के लिये प्रोत्साहित किया और **''मृत्युञ्जय सर्वस्व'', ''उपनयन सर्वस्व'', ''अग्निहोत्र सर्वस्व'', ''उपहार सर्वस्व'', ''दो पुटन के बीच'', ''सत्यार्थ कल्पतरु'', ''उद्देश्य सर्वस्व''** आदि अनेक ग्रन्थों का प्रणयन हुआ।

स्वामी दीक्षानन्द का प्रकाशक रूप—प्रवचन और साहित्य प्रचार का मुख्य आधार हैं, यह सोचकर वैदिक-साहित्य निर्माण में अपने नाम को सार्थक करते हुए स्वयं को दीक्षित कर दिया। उक्त उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए अपने गुरुवर्य के नाम से **समर्पण शोध संस्थान** की स्थापना की।

प्रकाशन की उत्कृष्टता को देखकर अमर शहीद आर्यश्रेष्ठ महाशय राजपाल के सुपुत्र, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली के अधिपति, डी०ए०वी० कॉलेज प्रबन्धकर्तृ समिति के उपप्रधान श्रद्धेय विश्वनाथ जी ने कहा कि **जो कार्य अकेले स्वामी जी कर रहे हैं वैसा तो बड़ी संस्थाएँ एवं सभाएँ जिनके पास साधनों की कोई कमी नहीं है, वे भी नहीं कर रहे हैं। मौलिक साहित्य की रचना और प्रकाशन ही नहीं, अपितु अप्राप्य और लुप्त वैदिक धर्म के मानक ग्रन्थों का पुनरुद्धार उनके पुनर् प्रकाशन द्वारा किया जाने वाला आपका प्रयास सर्वथा प्रशंसनीय है........इसके लिए आर्य जगत् आपके प्रति सदैव ऋणी रहेगा।** श्री वीरेन्द्र एवं स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने भी कुछ इसी प्रकार की टिप्पणियाँ की हैं।

वैदिक सिद्धान्त प्रतिपादक ग्रन्थों का विधिवत् प्रकाशन—संमर्पण शोध संस्थान में १९८३ से वैदिक सिद्धान्त प्रतिपादक ग्रन्थों का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। **वेदमञ्जरी, ऋग्वेद मण्डल मणि-सूत्र, वैदिक विनय, शतपथ ब्राह्मण का भाष्य, पुरुष सूक्त का विवेचनात्मक अध्ययन, सामवेद संस्कृत भाष्य,** (राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित) इत्यादि ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ। स्वामी जी ने एक अन्य प्रकाशन संस्थान **'कुसुमलता आर्य प्रतिष्ठान'** के नाम से स्थापित कर दी। इसके अन्तर्गत **स्वाध्याय संहिता, अग्नि देवता** एवं **इन्द्र देवता का अध्ययन, Anthology of Vedic Hymns, Glimpses of Swami Dayanand, Works of Pt. Gurudatta Vidyarthi, Veda The Right Approach** इत्यादि ग्रन्थ प्रकाशित हुए। समर्पण शोध संस्थान से **५०** एवं कुसुमलता आर्य प्रतिष्ठान से **१५** ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। **सत्यं शिवं सुन्दरम्** स्वामी जी की प्रकृति थी और उनके सभी कार्यों में इसके दर्शन होते थे। प्रकाशन के क्षेत्र में यह एक नयी दिशा का सूत्रपात था।

स्वामी दीक्षानन्द का संस्थापक रूप—विद्यार्थी काल से ही स्वामी जी संस्था स्थापित करने में रुचि रखते थे। अतः **भटिण्डा** में उपदेशक विद्यालय की स्थापना कर डाली। पुनः स्वामी समर्पणानन्द जी के आदेश से **गुरुकुल प्रभात आश्रम** को इस प्रकार चलाया जैसा कि संस्थापक ही हों। प्रभात आश्रम के धनुर्विद् देश का सम्मान बढ़ा रहे हैं। **समर्पण शोध संस्थान** साहिबाबाद वैदिक साहित्य के प्रकाशन का विशिष्ट केन्द्र है। **कुसुमलता आर्य प्रतिष्ठान** भी आर्य साहित्य के प्रकाशन का केन्द्र बन गया है।

अपनी परम्परा का एकमात्र व्याख्याकार—आर्य जगत् इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि स्वामी दीक्षानन्द अपने ढङ्ग से, कुछ निराले या पूर्णतः नये ढङ्ग से सोचते, टीका करते थे, व्याख्या करते थे। कई बार तो वे व्याख्यायें वाद-विवाद का विषय भी बन जाती थीं, उनकी आलोचना भी होती थी, क्योंकि वे व्याख्याएँ लीक से हटकर होती थीं। हों भी क्यों नहीं स्वामी जी ऋषि थे, कवि थे, मनीषी थे और क्रान्तदर्शी भी। अतः अपनी ऊहा से आर्य जगत् को नित नया देने में लगे रहे। शायद स्वामी जी की इसी बात को देखकर आर्यसमाज शान्ताक्रुज, मुम्बई में हुए सात दिन के प्रवचनों को नियमित रूप से सुनने के बाद **स्वामी सत्यप्रकाश जी** महाराज को कहना पड़ा—**''दीक्षानन्द अपनी परम्परा के अन्तिम व्याख्याता हैं। मुझे लगता है ऐसा कोई पैदा हो जाए तो दूसरी बात है।''** शायद इसीलिये गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने स्वामी जी को **विद्यामार्तण्ड** की मानद उपाधि से सम्मानित किया।

समाचार - सूचनाएं

- मई दिवस 1 मई 2020
- महाराणा प्रताप जन्म 9 मई 1540 को राजस्थान के कुम्भलगढ़, दुर्ग में महाराणा उदयसिंह एवं माता राणी जयवंत कंवर के घर हुआ था।
- शिक्षक दिवस 5 फरवरी 2020
- स्वामी श्री दर्शनानन्द सरस्वती स्मृति दिवस 11 मई, शत-शत नमन।
- स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती स्मृति दिवस 15 मई, शत-शत नमन।
- स्वामी श्री रामेश्वरानन्द सरस्वती स्मृति दिवस 18 मई, शत-शत नमन।
- विनायक दामोदर वीर सावरकर जन्म दिवस 28 मई, शत-शत नमन।
- क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा पुण्य तिथि 31 मई, शत-शत नमन।

सूचना

आर्य समाज, नोएडा, आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति पंजीकृत, नोएडा की साधारण सभा व वार्षिक चुनाव जो 3-5- 2020 को होने निश्चित किए गए थे, कोरोना त्रासदी के कारण 7-6-2020 को कराने का निर्देश चुनाव अधिकारी डॉ. वीर पाल विद्यालंकार द्वारा दिया गया है।

विजेंद्र कठपालिया

मंत्री आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति पंजीकृत, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा

विनम्र श्रद्धांजलि...

- वैदिक विदुषी, देश विदेश में वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में समर्पित एवं सुयोग्य लेखिका डॉ. ऊषा शर्मा जी के निधन से आर्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा परिवारजनों एवं हम सभी बंधु बांधवों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति। आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि!!

- आर्यजगत को भारी क्षति! ऋषि दयानन्द मिशन को आगे बढ़ाने वाली संस्थान की अध्यक्षा एवं संस्थापक, जनज्ञान की संपादक, वेद-वितरक परोपकारिणी सभा की सदस्य, श्रीमती ज्योत्सना धर्मवीर की पूज्य माता पंडिता राकेश रानी जी का स्वर्गवास हो गया। माता जी और स्व. पंडित भारतेन्द्र नाथ जी भारत में वेद और राष्ट्रवाद के संदेश समस्त संसार में प्रचार करने वाले अनूठे दम्पति थे। आप दोनों का योगदान आर्यसमाज सदैव स्मरण रखेगा। वह चारों वेदों की विश्व की प्रथम प्रकाशिका थीं। दिव्या आर्या उन्हीं की सुपुत्री हैं व श्री कैलाश सत्यार्थी दामाद हैं। आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि!!

- आर्यजगत के प्रख्यात आर्य नेता टंकारा ट्रस्ट के मंत्री, डीएवी के उपप्रधान, अनेक गुरुकुलों के पोषक श्री रामनाथ सहगल जी के निधन की सूचना अत्यंत हृदय विदारक है। आर्य समाज नोएडा से आपका विशेष रूप से नाता था। सदा ही आपका आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन मिलता रहा है। उनके जाने से आर्यजगत की एक अपूरणीय क्षति हुई है। परमात्मा-पवित्र आत्मा को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करें। सहगल परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि!!

- प्रबंध सम्पादक

‘विश्ववारा संस्कृति’ के नियम व सविनय निवेदन

1. यदि ‘विश्ववारा संस्कृति’ दिनांक 20 तारीख तक नहीं पहुंचती है तो आप प्रबंध संपादक के नाम पत्र डालें। पत्र मिलते ही ‘विश्ववारा संस्कृति’ पुनः भेज दी जायेगी।

2. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा के नाम भेजें। वीपी, रजिस्ट्री द्वारा पत्रिका नहीं भेजी जायेगी।

3. लेख प्रबंध संपादक ‘विश्ववारा संस्कृति’ के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त होने चाहिए तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुंदर लेख कागज के एक ओर लिखे होने चाहिए।

4. ‘विश्ववारा संस्कृति’ में विज्ञापन भी दिये जाते हैं, परंतु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही लिया जायेगा।

5. यह ‘विश्ववारा संस्कृति’ पत्रिका समाज-सुधार की दृष्टि से मानव कल्याणार्थ निकाली जाती है। इसमें आपको धर्म, यज्ञ, कर्म, समाज सुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, स्वास्थ्य, योगासन, सदाचार, संस्कार, नैतिकता, वैदिक विचार, शिक्षा आदि एवं अन्य विषयों पर हिंदी, अंग्रेजी व संस्कृत के लेख पढ़ने को मिलेंगे।

6. ‘विश्ववारा संस्कृति’ के दस ग्राहक बनाने वाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क ‘विश्ववारा संस्कृति’ भेजी जायेगी तथा पचास ग्राहक बनाने वाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क पत्रिका भेजी जायेगी तथा उसका फोटो सहित जीवन-परिचय ‘विश्ववारा संस्कृति’ में निकाला जायेगा।

7. अन्य पत्र-पत्रिकाओं में पहले छपा हुआ लेख ‘विश्ववारा संस्कृति’ में नहीं छापा जायेगा।

8. अनाधिकृत रूप से लिए लेख, रचना, कविता के लिए प्रेषक ही उत्तरदायी होंगे।

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक
‘विश्ववारा संस्कृति’
आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, उप्र
संपर्क सूत्र : 0120-2505731, 9871798221, 7011279734
ई-मेल : info.aryasamajnoida33@gmail.com
captakg21@yahoo.co.in

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यूं दी गुरु-दक्षिणा

पूर्ण विद्याध्ययन के बाद दयानन्द सरस्वती ने अपने गुरु की पसन्द को देखते हुए ‘गुरु-दक्षिणा’ में आधा सेर लौंग भेंट करनी चाही। इस पर स्वामी विरजानंद ने दयानंद सरस्वती से बतौर गुरु-दक्षिणा, कुछ वचन मांगते हुए कहा कि देश का उपकार करों, सत्य शास्त्रों का उद्धार करो, मतमतान्तरों की अविद्या को मिटाओ और वैदिक धर्म का प्रचार करो। तब स्वामी दयानन्द ने अपने गुरु के वचनों की आज्ञापालन का संकल्प लिया और गुरु का आशीर्वाद लेकर आश्रम से निकल पड़े। उन्होंने देशभर का भ्रमण और वेदों के ज्ञान का प्रचार-प्रसार करना शुरू कर दिया। स्वामी दयानंद सरस्वती ने वेद-शास्त्रों के आधार पर आध्यात्मिक ज्ञान, योग, हवन, तप और ब्रह्मचर्य की शिक्षा प्रदान की। उन्होंने अलौकिक ज्ञान, समृद्धि और मोक्ष का अचूक मंत्र दिया- ‘वेदों की ओर लौटो’। उन्होंने बताया कि ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है। जिस प्रकार तिलों में तेल समाया रहता है, उसी प्रकार भगवान सर्वत्र समाए रहते हैं। आत्मा में ही परमात्मा का निवास है। परमेश्वर ने ही इस संसार (प्रकृति) को बनाया है। उन्होंने ‘मुक्ति’ के रहस्य बताते हुए कहा कि जितने दुःख हैं, उन सबसे छूटकर एक सच्चिदानंद स्वरूप परमेश्वर को प्राप्त होकर सदा आनंद में रहना और फिर जन्म-मरण आदि दुःखसागर में न गिरना, ‘मुक्ति’ है। ‘मुक्ति’ पाने का मुख्य साधन सत्य का आचरण है।

❍ (क्रमशः)

तुलसी ड्रिंक से मजबूत होगा इम्यूनिटी सिस्टम

आजकल कोरोना महामारी से लड़ने के लिए जिन खास बातों पर जोर दिया जा रहा है उनमें से एक इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाना है। रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत करने के लिए तुलसी के पत्तों से बनी ड्रिंक मददगार साबित हो सकती है। यह ना केवल आपकी इम्यूनिटी को मजबूत करेगी बल्कि आपको कई अन्य रोगों से भी बचाए रखने में काफी मददगार साबित हो सकती है। इसके अलावा बदलते मौसम में होने वाले खांसी, जुकाम और बुखार से बचाव में भी यह ड्रिंक आपकी रक्षा करेगा।

दरअसल जिन लोगों को जुकामखांसी नहीं भी है वे इनसे संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से आसानी से इसका शिकार हो जाते है। ऐसा संक्रमण के जरिए होता है। जब संक्रमित व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के पास खांसते या छींकते है तो कमजोर इम्यून सिस्टम होने के कारण उन्हें भी यह समस्या हो जाती है। इसलिए इस तरह के संक्रमण से बचे रहने के लिए रोग प्रतिरोधक क्षमता का मजबूत होना बहुत जरूरी है।

ऐसे बनती है यह ड्रिंक : यह ड्रिंक तुलसी के पत्तों से तैयार की जाती है। इसे बेसिल वॉटर ड्रिंक के नाम से भी जाना जाता है। नेशनल सेंटर फॉर बायोटेक्नोलॉजी इंफॉर्मेशन के द्वारा जारी एक रिसर्च रिपोर्ट में यह बताया गया है कि तुलसी की पत्ती में इम्यूनिटी सिस्टम को मजबूत करने का गुण पाया जाता है। वहीं, गर्म पानी के साथ अगर हम इसकी पत्तियों को उबालते है तो इसमें मौजूद इम्यूनिटी बूस्टर गुण पानी में आसानी से घुल जाते है, जिसे हम ड्रिंक के रूप में पीने के लिए इस्तेमाल कर सकते है और हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत हो सकती है। इससे कई प्रकार के संक्रामक रोगों से भी बचे रहने में मदद मिलेगी।

क्या हैं फायदे

पाचन क्रिया में सहायक : तुलसी की पत्ती से तैयार की गई ड्रिंक को पीने से पाचन क्रिया को बढ़ाने में भी काफी मदद मिलती है। रोज सुबह उठने के बाद अगर आप इस ड्रिंक को पीते है तो इससे आपका पेट भी साफ होगा साथ ही साथ आप का डाइजेस्टिव सिस्टम भी एक्टिव रूप से काम करेगा। दरअसल, तुलसी की पत्तियों में फाइबर की मात्रा पाई जाती है जो पाचन क्रिया के लिए बहुत आवश्यक पोषक तत्व है। इसलिए अगर आप भी अपने पाचन तंत्र को मजबूत रखना चाहते है तो इस ड्रिंक का सेवन कर सकते है।

डायबिटीज के जोखिम को कम करे : डायबिटीज के मरीजों के लिए भी यह ड्रिंक काफी फायदेमंद मानी जाती है। जिन लोगों को डायबिटीज की समस्या है वे लोग इस ड्रिंक को हफ्ते में तीन से चार बार पीने के लिए इस्तेमाल कर सकते है। तुलसी की पत्ती में मौजूद एंटी डायबेटिक गुण डायबिटीज होने के खतरे को कम करते है। वहीं, अगर किसी को डायबिटीज की समस्या है तो वह डायबिटीज के कारण होने वाले स्वास्थ्य जोखिम के खतरे को भी काफी हद तक कम कर सकते है। इसलिए डायबिटीज से जूझ रहे लोग इस दिन का सेवन कर सकते है।

एंटी इन्फ्लेमेटरी गुण से भरपूर : कहीं खेलते वक्त या किसी काम को करते वक्त अगर आपके हाथ में सूजन आ गई है तो उस स्थिति में भी यह ड्रिंक आपके लिए काफी फायदेमंद हो सकती है। इतना ही नहीं, अगर आपको एक्सरसाइज करने के दौरान मांसपेशियों में खिंचाव के कारण सूजन आई है तो उसमें भी यह ड्रिंक काफी मददगार साबित हो सकती है।

त्वचा के लिए लाभदायक : त्वचा के लिए भी तुलसी की पत्तियां काफी फायदेमंद मानी जाती है। इसलिए इस ड्रिंक का सेवन करने से आपको त्वचा संबंधित फायदे भी अवश्य मिलेंगे। तुलसी की पत्तियों में एंटीऑक्सीडेंट की मात्रा पाई जाती है। यह एक ऐसा तत्व है जो आपके शरीर की त्वचा को निखारने और उनमें एंटी एजिंग का प्रभाव उत्पन्न करने की क्षमता रखता है। इसलिए चाय के साथ तुलसी की पत्तियों का इस्तेमाल भी किया जाता है। त्वचा संबंधित फायदों के लिए आप भी तुलसी की पत्तियों से बनी ड्रिंक का सेवन कर सकते है।

डिटॉक्सीफाई करने में मददगार

इस ड्रिंक को पीने से आपके शरीर को डिटॉक्सिफाई करने में भी काफी मदद मिलती है। दरअसल, डिटॉक्सीकरण एक ऐसी क्रिया होती है जो शरीर से टॉक्सिक पदार्थो को बाहर निकालने का काम करती है। यह मुख्य रूप से लीवर के द्वारा संपन्न होती है। इससे लीवर फंक्शन को भी सक्रिय रूप से काम करने में काफी मदद मिलती है और आपका शरीर कई प्रकार की बीमारियों से सुरक्षित रहता है। इसलिए इस ड्रिंक को रोजाना डिटॉक्स ड्रिंक के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है।